आर एन आई नम्बर UPHIN/2017/74520

साहित्य सरोज

वर्ष-3 अंक -1 गहमर त्रैमासिक जनवरी 2020 से मार्च 2020 मुल्य 30

बेवसाइटः https://sarojsahitya.page ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-3 अंक -1

माह जनवरी 2020 से मार्च 2020

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादक -: श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल
प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''
संपादक -: डा० कमलेश द्विवेदी, दशरपुरवा कानपुर
सहायक संपादक -: डा० रमेश तिवारी दिल्ली
अध्यक्ष तकनीकी विभाग -: श्री राजीव यादव
प्रधान कार्यालय -: मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

प्रधान कार्यालय व्यवस्थापक :-
प्रशांत कुमार सिंह
ईमेल sarojsahitya55@gmail.com
9451647845

बेवसाइट-: https://sarojsahitya.page
मोबाइल अप्लीकेशन प्ले स्टोर- साहित्य सरोज
प्रति अंक -30रूपये मात्र,

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, तहसील जमानियाँ, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयाँ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर
चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

अनुक्रमाणिका

जीवन तेरे कितने रूप	कांति शुक्ला	02
तलवार है गंगा	प्रो० विश्वम्भर शुक्ल	03
पाकिस्तानी जासूस	अश्वनी	04
हर हर गंगे	डा० प्रिया सूफी	09
गंगा हमारी माँ	साधना कृष्ण	09
अभ्रदता की हद	निक्की शर्मा	10
ये सचमुच पढ़ने	सुभाषचंदर	11
क्रान्तिकारी कामरेड-	डा. मन्नुराय	12
कल और आज गंगा	डा.ज्योति मिश्रा	14
मंदिरो के नहीं पट नहीं	प्रियंका गौड	15
दुल्हन की तरह	संगीता शर्मा	16
होशियार घरनी	मिन्नी मिश्रा	17
पडोसी की पत्नी	इंदु पटना	17
अपने लिए जीना	सीमा निगम	18
प्रियतम को आने	पुष्प लता शर्मा	19
तो जपते रहें नारी	सरिता सिंह	20
हे पाप नाशनी	आभा मेहता	21
पेरिय पुराणम या	डा जमुना कृष्णराज	22
कचनार के फूल	अपराजितना अनामिका	23
कुछ तो चैन	इंदुरान	31
मातमपुरसी	आराधना	32
एकांत	कंचन जायसवाल	32
अपना अपना भाग्य	स्वराक्षी स्वरा	33
नीलम श्रीवास्वत की	ग़ज़ल	33
नमानी गंगे	सीता देवी राठी	34
मेरे प्रेम की तरह	डा०विजेता साव	35
कभी सोचा न होगा	रेखा दुबे	36
जय जय जय	ओम प्रकाश शुक्ल	38
मोक्षदायनी	डा०नीरज अग्रवाल	39
वतन से प्रेम	सिम्पल काव्यधारा	39
पावंदी के बाद	लक्ष्मण प्रसाद	40
अरबो रूपये से भी	ज्योति रतन	41
प्यास बुझाती	ज्योतिर्मयी पंत	43
क्या निर्भया को इंसाफ	माधुरी भट्ट	44
बिखरता संबरता	सीमा रानी मिश्र	45
साहित्य में जीवन	कान्ति शुक्ला	46
हर हर गंगें	**अन्नुपूर्णा बाजपेई**	**47**

जीवन तेरे कितने रूप

छोटी अम्मा यूँ तो भरी जवानी में विधवा हो गईं थीं। आयु मात्र बाईस वर्ष और पति की निशानी एक बेटा पर उन्हें देख कर सदैव लगता था कि अपने आस पास के वातावरण से अनभिज्ञ हैं। सामने पहाड़ सी जिन्दगी अकेले काटने को थी। पुनर्विवाह की कल्पना ब्राह्मण विधवा के लिए रौरव नरक भोगने की यातना के समकक्ष रहा और वैधव्य एक भयंकर अभिशाप, बेटे के लिए जीने को प्रारब्ध का लेख समझ जीवन- संघर्ष के अगाध सागर में उतर पड़ीं। अब यही नियति और यही उनकी दुनिया थी। उनके पति बड़े सरल चित्त रहे, अग्रजों के परम आज्ञाकारी । वैसी ही भार्या मिली, जरूरत से ज्यादा सिधाई भी दोष बन जाती है। छोटी अम्मा सास और दोनों जिठानियों के कड़े अनुशासन के बंधन में बंधी बात- बात पर झिडकी जातीं , उनके हर काम में गलतियाँ निकाली जातीं ।चाहे बेटे का लालन-पालन हो या घर का काम बिना चार बातें सुने कभी सम्पूर्ण नहीं हुआ। बेचारी दिन भर चाकरी बजातीं और रात में पति की याद में आंसू बहातीं।

भौतिक जगत की बाह्य गतिविधियों से ताउम्र तटस्थ रहीं छोटी अम्मा की दुनिया घर के कार्यों तक सीमित थी। कभी-कभी आंगन से उड़ते हवाई जहाज को हाथ का काम छोड़ टकटकी लगा कर तब तक देखतीं जब तक वह दृष्टि से ओझल नहीं हो जाता, कोई टोकता तो हडबडा कर कह उठतीं , ये चील गाड़ी धरती पे नहीं आ सकती क्या ? घर के लोग जी भर के खिल्ली उड़ाते,क्या तुम्हें बैठ कर उड़ना है ? जो उसके नीचे आने का इन्तजार करतीं हो। उडाये जाओ हँसी , उनके मन में तो गहरे यही बात रही, चील गाड़ी उतरे और उन्हें बिठा कर कहीं दूर लेकर चली जाये ,फिर वे लौट कर न आयें इस नरक में , हो सकता है ऊपर पति से ही मिलना हो जाये पर न कभी चील गाड़ी उनके आंगन में उतरी और न उनकी यह उत्कट इच्छा पूरी हो सकी, दिनचर्या बड़ी नीरस , सास जिठानी की ऊँगली के इशारे से भागती दौड़ती छोटी अम्मा को यदि कभी बुखार आ जाता तो इलाज कराना तो दूर , सब हाय- हाय करते ,अब ये खटिया पर पड़ गईं ,काम कौन करेगा? बेचारी जिठानी से अनुरोध करतीं, हमें तो बेसन की लुचई बना के शक्कर के संग खाने को दे दो तो हमारा बुखार उतर जाये। अब इस शर्तिया इलाज का सर पैर किसी रस वैद्य को भी समझ में नहीं आ सकता कि बेसन की पूड़ी और शक्कर से बुखार किस प्रकार उतर सकता है? शायद इस प्रश्न पर आचार्य चरक भी निरुत्तर हो जाते पर चूंकि जिठानी को गृह कार्य में व्यवधान आ जाने से बड़ी इल्लत का सामना करना पड़ता सो वे झींक हार के बेसन आटा मिलाकर , हींग अजवाइन नमक डाल कर अदरैनी लुचई बनातीं। थाली में शक्कर रख के देवरानी को देतीं , लो खालो दुलैन और जल्दी अच्छी हो काम से लगो। छोटी अम्मा बड़ी तृष्णा से जी भर खातीं और तृप्त हो उठतीं , यह उनके जीवन के अपार संतोष के क्षण होते।

वही दिनचर्या और वैधव्य के धर्म-कर्म ढोते छोटी अम्मा अधेड़ावस्था के छोर तक आ पहुंची, बेटे की शादी हो चुकी थी इसलिए अब सत्ता बहू के हाथ में थी, दुबली पतली सांवली बहू भले ही शरीर से कमजोर पर मुँह की बड़ी सहजोर, सास पर उसके अनुशासन का बंधन तनिक भी शिथिल नहीं, उनके हर काम में खोट निकालने वाली बहू की जबान दिन भर कतरनी सी चलती, क्लांत श्रांत देह को रात में भी चैन की नींद दुर्लभ चंद दिनों के साथी पति की स्मृतियाँ रात भर कचोटतीं। हैरत की बात तो यह थी कि इतना कष्ट सहने पर भी कभी उनके मुँह से यह नहीं निकला ऐसे जीवन से मौत भली। उल्टा हमेशा यही कहतीं रहीं हम तो यही चाहते हैं कि हमें कुछ न हो कभी नहीं तो हमारी बहू अकेले कैसे काम काज संभालेगी ,बेचारी कमजोर सी है, अगर कभी वे बेटे को भोजन परोसने का सुयोग पा जातीं तो मारे लाड़ के दाल में ज्यादा घी डाल बैठतीं , रोटी घी से तर कर देतीं तो उनका खुद का खाना हराम हो जाता। बहू हजार बातें भिंगो- भिंगो के सुनाती, सब लला के ही पेट में ठूंस दो , हमें तो कभी ऐसे नहीं परोसा , आग लगा दो गृहस्थी में, बेचारी सहमी सिटपिटाती मुँह छुपाये फिरतीं और सूखी रोटी को तरस जातीं।

होनी बलवान , एक शाम जब दूध दुहने वाला आया तो रोज की तरह छोटी अम्मा बछड़ा खोलने ढोरों के सार तक गईं, बछड़ा खुलते ही माँ के थन से ऐसा चिपटा कि सूंट कर दूध पी गया , हटाये नहीं हटा, दूधिया ने जैसे

तैसे मार-मूर कर हटाया पर थनों में दूध बहुत कम निकला। दूध लेकर छोटी अम्मा घर गईं , जैसे ही बहू ने बाल्टी देखी एकदम से आगबबूला हो गई, आव देखा न ताव खींच कर पीतल की बाल्टी अम्मा के सर पर दे मारी। हडबडा कर वे आगे बढीं और फैले दूध में फिसल कर गिर पड़ीं । छोटी अम्मा का सर फूट गया था। एक ओर दुग्ध धार बह रही थी तो दूसरी ओर रक्त धार पर बहू का क्रोध सीमा पार कर गया , गिरी हुई छोटी अम्मा की छाती पर चढ़ कर बहू उनका गला दबाने लगी द्य वे गों- गों करती हुई बहू की तरफ कातर भाव से देख रहीं थीं , प्राण छूटने को थे, तभी मईदार सार की चाबी देने घर में घुसा दृ सामने आंगन में यह दृश्य देख चीत्कार कर उठा , लपक कर उन्हें बहू के हाथों से छुड़ाया द्य भाग कर बगल के घर से मलमल का कपड़ा मांग लाया , घाव साफ़ कर मलमल जला कर उनके सर के घाव में भरा और सहारा देकर बिस्तर पर लिटा दिया ।

रात भर अपनी खटिया पर बिलखती छोटी अम्मा की सुध लेने वाला कोई नहीं था, देर रात बेटा आया तो वह भी रोज की तरह सीधा अपने कमरे में चला गया, खैर उनके जीवन की बहुत सी अँधेरी रातों के समान यह रात भी आखिर कट ही गई। सीधी-सादी अम्मा जो बड़ी-बड़ी बातें सह जातीं थीं , यह व्यथा सहन नहीं कर पा रहीं थीं, सर का घाव तो सूखने लगा था पर मन का घाव भरने का नाम नहीं ले रहा था। विषम ज्वर पीछा नहीं छोड़ रहा था और बेसन की लुचई शक्कर के साथ खाने की सोचना भी घोर पाप और अक्षम्य अपराध था। इस घटना के आठ-दस दिन बाद एक रात कब उनका चोला छूट गया , किसी को पता नहीं चला ।जिन्दगी भर सबकी चाकरी करने वाली छोटी अम्मा के समीप प्राण निकलते समय कोई दो बूँद गंगा जल डालने वाला भी नसीब नहीं था।

घर के सभी प्राणी अपने- अपने कमरों में सुख की नींद सोते रहे और वे इस नश्वर संसार से चुपचाप चलीं गईं । सबेरे उनकी निर्जीव देह पर सर पटक-पटक कर घोर विलाप करती बहू को देख मईदार, कामदार दबे स्वरों में कहते सुने गए कि इसी भट्टी दुष्टा ने डुकरिया के प्राण ले लिए पर न्याय के लिए नालिश करने वाली माटी की देह तो माटी में पड़ी थी।

श्रीमती कान्ति शुक्ला"उर्मि"
अयोध्यानगर, भोपाल

तलवार है गंगा

सौगंध है ,अभिमान है ,तलवार है गंगा ,
स्वर्ग का उपहार है , उपकार है गंगा !

गंगा है आन -मान,भारती कीश आरती,
अस्मिता की आँच है ,अंगार है गंगा !

कितना गरल समेटती है मोक्ष-दायिनी,
दुर्गन्ध ,प्रदूषण लिए स्वीकार है गंगा ?

आभार मृदुल, हो पवित्र आचमन, नीरा,
शुचिता से पूर्ण स्नान तो साकार है गंगा !

लहरों में हो निखार,अमित प्यार है तुमसे,
तुमको नमन,प्रणाम बार -बार है गंगा !

प्रोविश्वम्भर शुक्ल
लखनऊ 9005899887

पाकिस्तानी जासूस–अश्विनी

आज बरसों बाद अपनी जन्मभूमि लौटी हूं। 10 साल की थी जब यहां से गई थी। अपना घर होते हुए भी इतने सालों में मैंने मुड़कर नहीं देखा। ऐसा नहीं था कि इन गलियों , इन चौराहों कि मुझे याद नहीं आती थी, मगर कुछ ऐसी कड़वी यादें भी थी जो मन में टीस जगा जाती थी। मां और पापा साल 2 साल में एक चक्कर लगा जाते थे। मगर उनके देहांत के बाद तो वह कड़ी भी टूट गई। आज मेरी रिसर्च मुझे यहां वापस ले आई है यहां आकर मेरी खोज पूरी होगी या फिर किसी और कारण से मेरी किस्मत मुझे यहां खींच लाई हैं।ऐसे कई संकोच भरे सवाल लेकर मैं मुंबई से चली थी सारी शंका व सारे संकोच स्टेशन उतरते ही छू हो गए।

तेजी से बदलती इस दुनिया ने इतने सालों में इस शहर को भी पूरा आधुनिक बना दिया, मगर सच माने, मेरी बचपन की यादों वाला देहरादून आज भी जस का तस है। लोग कहते हैं कि इतने सालों में शहर की काया ही पलट गई। सच है। काया तो पलट गई मगर आत्मा वही है। फिजा भी वही, लीची अमरूद के बाग भी वही और यहां के लोगों की सादगी और भोलापन भी। इन्हीं सब से ही तो बनती है एक जगह की आत्मा। जिसे बस महसूस किया जाता है।

जब यहां से गई थी तब मैं बच्ची थी और आज अपनी बच्ची के साथ लौटी हूं। सामान को ऐसे ही रहने देते हैं। आकर अनपैक करेंगे। रवि बोले, आकर? कहां जाना है? अभी अभी तो आए हैं। अभी तो पूरा घर भी नहीं देखा पापा। छोटी रूही ने मुंह बना कर कहा। अरे बाबा हम पूरी छुट्टियां यही है। जल्दी क्या है? रवि ने उसे दुलारते हुए कहा। मैंने भी सोचा ठीक ही है अभी घर में खाना बनाने का सामान है भी नहीं और शीला को तकलीफ देना भी ठीक नहीं। पहले ही क्या कम तकलीफ दी है। हमारे आने से पहले उसने सारे घर की सफाई करवाई थी। वैसे बचपन की दोस्त पर इतना हक तो बनता ही है। यही सब सोचती मैं फ्रेश होने चली गई।

धीरे धीरे शाम ढलकर रात में तब्दील हो रही थी। दुकानों की बत्तीयां जल उठी। अब तो मुझे यूँ लग रहा था मानो मैं पापा का हाथ पकड़े सजी हुई दुकानों को निहारती चली जा रही हूँ। रवि और रूही भी इस खूबसूरत पहाड़ी शाम का मजा ले रहे थे मगर मेरी तरह नहीं। मैं तो मानो अतीत और वर्तमान के झूले में हिंडोले ले रही थी। हवा में ठंड और ताजगी थी। अभी जाड़ा शुरु नहीं हुआ था या फिर यूँ कह ले कि यह जाडों के पहले के दिन थे। रह रह कर ठंडी हवा कंपकंपी मचा जाती। खैर मेरी झुरझुरी का कारण तो कुछ और ही था। ये जानी पहचानी सड़के, झंडेवाला चौक, गाँधी गार्डन, यहाँ की हर बात और हर चीज मुझे रोमांचित कर रही थी।मानो दशकों की दूरियां मिटा कर बचपन मुझे पुकार रहा था। बेचारी रुही हैरान थी कि मम्मा क्यों रह-रहकर उसकी तरह बातें कर रही हैं।

चाट गली पहुंचकर तो ऐसा लगा जैसे

मेरी यादों ने प्रत्यक्ष रुप ले लिया हो। शीला, रजनी ,दमनप्रीत, सोनू ,रोहन और मैं लगभग हर दिन स्कूल छूटने के बाद यहां आते थे। आज भी चाट का वही चटपटा स्वाद ! .खाकर मजा आ गया। मुंबई की चाट में यह स्वाद कहाँ ।

चाट गली के नजदीक ही तो था हमारा स्कूल। 'मम्मी यह आपका स्कूल है? इतना छोटा !' रूही ने आश्चर्य जताते हुए कहा। मैं जवाब में मुस्कुरा दी और मन ही मन सोचने लगी कि इस छोटे स्कूल में जो सीखा वही तो जीवन का आधार बना और यहां जैसे दोस्त बने वैसे फिर कभी ना बन पाए।

यूं ही चलते चलते हम न जाने कितनी दूर आ गए थे। सड़क के दोनों ओर इतनी दुकानें आ गई है कि कहां से शुरू हुए और कहां पहुंचे कुछ पता ही नहीं चल रहा था। दूर से लाल कोठी नजर आई तो जाना कि हम कालीदास रोड पहुंच गए हैं। लाल कोठी इतनी ऊंची है कि दूर से ही नजर आ जाती है। यह तब भी कालीदास रोड की शान थी और आज भी है। अंग्रेजों के जमाने की हवेली है। अंग्रेज सुपरिटेंडेंट का घर हुआ करता थी यह हवेली। सरकारी हवेली थी। दूर - दूर तक फैले बाग-बगीचों के बीच शान से खड़ी रहती थी ये हवेली। अब उसके इर्द-गिर्द कई नए जमाने के मकान आ गए हैं । मगर सब रानी हवेली की दासियों प्रतीत होते हैं।

कई बार आई थी मैं इस हवेली में। दमनप्रीत का घर जो था। घर क्या था पूरा भूल भुलैया था। आईस - पाईस खेलने की अच्छी जगह । यही बातें मैं रूही को बता रही थी कि तभी हवेली के आगे काफी भीड़ नजर आई जो कोई अच्छे संकेत नहीं दे रही थी। नजदीक आए तो जाना कि मामला तो बड़ा गंभीर है। खून हो गया है भाई जी। बड़ी बेरहमी से मारा है बंदे ने। मोबाइल पर वीडियो खींचते एक नौजवान ने बताया । रवि ने चौक कर मेरी ओर देखा, तुम्हारी सहेली का घर बताया था ना तुमने ? नहीं वह तो अब यहां नहीं रहती मैंने जवाब दिया। अच्छा हुआ , नहीं तो उनको मार देते। वो कहां चले गए म्ममा मासूम रूही पूछने लगी। यह सब देख सुनकर वह घबरा गई थी मैंने मुस्कुराकर उसका हाथ सहलाते हुए कहा पता नहीं बेटा। मैं तो कई सालों से उस के कोंटेक्ट में नहीं हूं। शीला आंटी भी नहीं जानती। नए जमाने की पैदाइश मेरी बेटी को झट उपाय सूझ गया और बोली तो आप उन्हें facebook पर क्यों नहीं ढूंढतीं ?

नन्ही रुही की बात मुझे जंच गई थी। रात को नींद नहीं आ रही थी तो मैं Facebook पर दमन को ढूंढने लगी। लगभग एक दर्जन दमनप्रीत में से तीन से मुझे उम्मीद जगी और मैंने उन्हें मैसेज कर दिया। अब बस जवाब का इंतजार था। मैं सोने की कोशिश करने लगी मगर नींद तो जैसे मेरी आंखों की बैरी हो गई थी। मैं फिर अपनी यादों में डूब गई। घूम फिर कर मेरे ख्याल आज की घटना पर आ गए। आखिर लाल कोठी मेरे बचपन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। दमन का परिवार अचानक शहर छोड़कर चला गया था और कोठी बिकाऊ हो गई थी । मेरी मां भी उसे खरीदना चाहती थी। मैं भी तो गई थी मां के साथ ,घर देखने । एजेंट ने जिस तरह से हमें कोठी दिखाई उस तरह तो मैंने कभी नहीं देखी थी। वहां एक तहखाना था और बेहद डरावनी कालकोठरी भी । शायद भारतीयों को वह अंग्रेज सुपरिटेंडेंट यहीं पर यातना देता होगा। कुछ लोगों का कहना था कि वहां एक गुप्त सुरंग भी है । किसी ने कभी देखी नहीं थी और ना ही दमन ने कभी इसका जिक्र किया था। उस कोठी को सरकारी दफ्तर बनाने की बात भी हो रही थी। फिर तो हमने ही यह शहर छोड़ दिया था । वहां दफ्तर बनाया या किसी ने खरीद लिया कौन जाने! अब कौन

वहां रहता होगा? यही सब सोचते सोचते मेरी आंख लग गई।

सुबह सात बजे का अलार्म बजा। मैने धीरे से रजाई से हाथ बाहर निकालकर उसे बंद किया और बिस्तर पर ही लेटी रही। एक तो सफर की थकान,ऊपर से ठंड और रात आँख भी देर से लगी थी। रजाई से निकलने का मन ही नहीं कर रहा था। रवि और रूही का हाल तो फिर पूछना ही क्या! दोनों गहरी नींद में थे।

बाहर सड़क पर कुछ शोर सुनाई दिया तो मैने खिड़की खोल कर झांका। सड़क किनारे एक फटेहाल औरत बैठी थी। शायद पागल थी। कुछ लड़के उसे सता रहे थे। लड़के उसे डराते और वह उन्हें पत्थर मारने दौड़ती और फिर दुबक कर बैठ जाती। मत मारो! जाने दो ! रोटी रावड़ी, रोटी रावड़ी । वह बड़बड़ा रही थी। लड़कों को इसमें न जाने क्या मजा आ रहा था। मुझे बेहद गुस्सा आया और उन्हें डांट कर भगा दिया। वह सहमी नजरों से मुझे देख रही थी। मैंने उसके पास जाना चाहा मगर वह अपना झोला पकड़कर यूँ भागी मानो मैं उसका कुछ चुरा लूंगी।

उस दिन बातों ही बातों में मैंने शोभा से उस पगली का जिक्र किया। कौन वह रोटी रावड़ी ? शीला ने पूछा। हाँ। कौन है वो? कहां से आई है? मैं पूछने लगी। पता नहीं सब उसे रोटी रावड़ी ही बुलाते हैं । हर वक्त यही रट जो लगाए रहती है। शीला ने लापरवाही से जवाब दिया मगर मैं तो जैसे उसके पीछे ही पड़ गई थी। मैंने कहा तुम लोग उसे अस्पताल या छ में क्यों नहीं भिजवाते? शीला हंसी और बोली, अरे तुम भी कहा उसके लिए भावुक हो रही हो। पहले हमने भी यही सोचा था मगर पास जाओ तो मारने दौड़ती है। पता नहीं झोले में क्या छुपाए घूमती है । कुछ लोग तो कहते हैं कि वह पाकिस्तानी जासूस है। फिर भी इंसानियत के नाते....। मेरी बात अधूरी ही रह गई और शीला कुछ याद करके चहक उठी अरे, मैं तो बताना भूल गई। सारे दोस्तों ने आज शाम गेट टूगेदर रखा है मधुबन होटल में। खास तेरे लिए है यह पार्टी । हम तो अक्सर मिलते रहते हैं। मगर तुम तो सालों बाद सबको देखोगी । पहचान भी नहीं पाओगी, वे कौन सा मुझे पहचान पाएंगे। मैंने तपाक से कहा और दोनों सहेलियां खिलखिला कर हंस पड़ी।

शाम को सब परिवार हम शीला की गाड़ी से पार्टी में पहुंचे। शीला ने बिट्टू को भी साथ ले लिया था। जरूरी भी था क्योंकि बड़ों की पार्टी में बच्चे बोर हो जाते हैं और अब तो रूही और बिट्टू पक्के दोस्त बन गए हैं। पार्टी में वक्त कैसे बीता कुछ पता ही नहीं चला। हम तो जैसे वही फोर्थ ग्रेडर बन गए थे। पुरानी यादें,शरारतें , टीचर्स, सब हमारी बातों में जीवंत हो गए। 3- 4 घंटे मानो चंद पलों में बीत गए।

घर आते आते काफी रात हो गई। 10 बजे तक सडके यहां सुनसान हो जाती है। उस पुल पर गुजरते हुए मुझे आज भी डर लग रहा है। यह पुल भी अंग्रेजों के जमाने का है।इसे भारतीय कैदियों द्वारा बनवाया गया था। कहते हैं कि बड़ी यातनाओं के साथ उन से काम करवाया जाता था। एक एक कर सबने पुल बनाते बनाते ही दम तोड़ा था। इसी कारण इसे शापित मानते हैं। हर साल यह पुल एक बली अवश्य मांगता है। शीला ने मेरे हावभाव ताड़ते हुए पूछा वही सोच रही हो ना? मैंने कहा ष्हां तुम ही बताओ क्या हर साल एक बली वाली बात सच है? शीला ने जवाब दिया । हां , हर साल यहां एक न एक बड़ी दुर्घटना तो होती ही है। मगर तुम फिक्र मत करो मैं बड़ी कुशल ड्राइवर हूं। कहते कहते उसने जोर से ब्रेक लगाया। जोर के झटके से सभी घबरा गए। बीच सड़क में कोई बैठा था। रोटी रावड़ी वह जोर जोर से

ताली पीट कर हंसने लगी। शीला चिल्लाकर बोली चल भाग यहां से। पगली कहीं की ।अपने साथ हमें क्यों मारना चाहती है! मगर वह हिली भी नहीं । तालियां पीटती वहीं बैठी रही । रवि ने कार का दरवाजा खोला ही था कि वह भाग खड़ी हुई।

अगली सुबह रवि और रूही मर्निंग वाक से आए तो एक नया समाचार लाए। रुही बोली ष्मम्मा वह पगली है ना, उसी ने लाल कोठी में खून किया था। बिट्टू ने बताया कि वह पाकिस्तानी जासूस है ।मैंने हैरानी से रवि की ओर देखा। रवि ने बताया हाँ, उसे कल रात कोठी के भीतर से गिरफ्तार किया गया। हैरानी तो इस बात की है कि पूरी कोठी तो पुलिस ने सील की थी ।फिर वह अंदर कैसे पहुंची? और कल रात को हमने भी तो देखा था उसे पुल पर। मैं भी हैरान थी। शायद वह सुरंग वाली बात सच हो और यह वही से आना-जाना करती हो, अपने खुफिया कामों के लिए। उसने खून कबूल किया? मैंने पूछा। पता नहीं । मगर उसकी झोली से खून लगी दराती मिली है जिससे खून किया गया था। रवि ने बाथरूम में जाते-जाते जवाब दिया।

मैं भी नाश्ता बनाने में लग गई। सुरंग , दुश्मन का जासूस , यह सब किताबों में पढ़ा था मगर आज हकीकत में घटते देख रही थी। थोड़ी देर में शीला आ गई और पूरा किस्सा विस्तार से बताया। इतनी बड़ी कोठी और किसी को पता ही नहीं था। न जाने वह जगह कब से उसका अड्डा थी। और साथी भी रहे होंगे । काल कोठरी में रहती थी। वहीं से एक गुप्त सुरंग थी जिससे यह आती जाती थी बिना किसी को खबर लगे। यह सुरंग पुल के नीचे खुलती है। इस सुरंग का पता तो वहां रहने वालों को भी नहीं था तो इस पगली को कैसे पता लगा? जासूस के सिवा यह काम और कौन कर सकता है! हां, हो सकता है अंग्रेजों के जमाने की कोठी है। सीमा पार से आए जासूसों का यही अड्डा हो। यह लोग अक्सर पागल बनकर ही घूमते हैं । वैसे कोठी में रहता कौन है? उन्हें इस बात की भनक कैसे न हुई? रवि ने शीला का समर्थन करते हुए कहा। मैंने कुछ याद कर के जवाब दिया दमन का परिवार उस हादसे के बाद जैसे गायब ही हो गया था। 1984 में भड़के सांप्रदायिक दंगों की सबसे भयानक रात थी वह। मुझे आज भी याद है। पापा तो दुबई में थे। हम मां के साथ बत्तियां बुझा कर टार्च लेकर,इस कमरे से उस कमरे में छिपते फिरते थे। रह रह कर दूर से नारों की आवाज आती थी।कभी हर हर महादेव तो कभी बोले सो निहाल । दंगाइयों ने उनके घर पर भी हमला किया था। सुना है उसके पापा जी तलवार लेकर कूद पड़े थे अकेले उन सबके सामने। आस पड़ोस वाले जब तक पहुंचते दंगाई पूरी तरह तोड़फोड़ कर चुके थे। उसी रात वे लोग यह शहर छोड़कर चले गए। ठीक भी है । कितना आघात हुआ होगा मन को! दंगाई भी तो सारे जान पहचान के थे। शीला बोली ष्हां फिर तो वही मसौदी लाल एंड संस वहाँ रहने लगे। पता नहीं खरीदा या कब्जा किया। रवि ने चौंक कर पूछा ऐसे कैसे कोई कब्जा कर सकता है ? अंधेर नगरी है क्या? नहीं , हो सकता है। वह वक्त ही ऐसा था। मसौदी लाल और उसके बेटे ही तो दुकानें लूटने और घर जलाने में सबसे आगे थे। उन दंगों में ऐसे कितने घर लुटे होंगे? न जाने अब किस हाल में होंगे वे! मैंने जवाब दिया। शीला भी भावुक हो उठी हां जो लुट गए उनका तो पता नहीं मगर जिन्होंने लूटा वे आज आबाद है । उसके सारे बेटे आज विदेशों में बसे हैं। मसौदी लाल तो अब रहा नहीं ।उसकी पत्नी यहां अकेली रहती थी। कैसे संभालती इतनी बड़ी हवेली। और वैसे भी लूटी संपत्ति की

बारीकियां वे क्या जानते? पता नहीं कितनों का गुट होगा इन जासूसों का । हो सकता है बुढ़िया ने इन जासूसों को देख लिया सुन लिया हो। तभी तो जान गवा बैठी। उस दिन मौन व्रत था उसका जब इस पगली ने उसे दराती से गोद डाला। बुढ़िया ने भी जान दे दी मगर अपना मौन व्रत नहीं तोड़ा। वरना चौकीदार तो बाहर ही खड़ा था। मैं अब भी हैरान थी। कौन बोल सकता है कि एक पगली के भेष में खतरनाक जासूस भी हो सकता है। मुझे तो कितना तरस आया था उस पर। मैंने कहा। कुछ देर के लिए हम सब चुपचाप बैठे रहे। बच्चे भी सारी बातें सुन रहे थे। उनका भी अपना नजरिया होता है। बिट्टू रूही को बता रहा था मैं बता रहा हूं तुझको यह पाकिस्तान की सहमत खान है । देखना इस पर भी पिक्चर बनेगी।

दोपहर का खाना शीला और मैंने मिलकर ही बनाया था। खाना मेज पर लगाकर हमने सोचा सब को आवाज लगा दे। तभी रूही और बिट्टू भागते हुए अंदर आए। रूही हाँफते हुए बोली मम्मा, बाहर बगीचे में कोई है । हम सब तुरंत बगीचे की ओर लपके और जो देखा उससे हम हक्के-बक्के रह गए। पौधों की आड़ में वह बैठी थी । खून से लथपथ । हमें देख कर हंसने लगी और फिर वही रट रोटी रावड़ी। हमारी तो चीख निकल पड़ी । रवि ने तुरंत पुलिस को सूचना दे दी। वह जासूस हो या कोई और , इस वक्त वह लहूलुहान थी। उसके पास न झोली थी न कोई हथियार। शीला और मैंने आंखों ही आंखों में फैसला किया। शीला तुरंत फर्स्ट एड बाक्स ले आई। हम हैरान थे कि यह पुलिस कस्टडी से भागी कैसे? कितनी शातिर है ! मगर पगली के लिए यह कोई नई बात नहीं थी । वह तो पागलखाने से भी कई बार भाग चुकी थी। वे हर बार पकड़ कर वापस ले जाते । बेहद लगाव जो था इससे । इसे बचपन से जो पाला था। मगर जबसे लाल कोठी में आकर छुपी थी कोई पकड़ नहीं पाया था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि पुलिस उसे क्यों पकड़ ले गई? बहुत मारा था उसे। मगर वह तो भाग आई। बहुत खुश थी और मन ही मन सोच रही थी अब फिर अपने घर में जाकर रहूंगी । यही सोचकर वह दर्द में भी खिलखिलाकर हंस रही थी। शीला और मैं सहमते हुए उसके नजदीक गए और उसे दवा लगाने लगे । वह भागना चाहती थी मगर खड़ी भी नहीं हो पा रही थी। तभी उसके हाथ पर वह तिरछा चोट का निशान देखकर हम चौंक उठे । ठीक ऐसा ही निशान तो दमन के हाथ पर बन गया था । अमरूद तोड़ने गए थे हम तीनों। चौकीदार की आहट पाकर हड़बड़ी में पेड़ से गिर पड़ी थी वह । 6-7 टांके भी लगे थे। उन टांको का निशान रह गया था। धड़कते दिल के साथ हमने उसे गौर से देखा तो अपनी बचपन की दोस्त को पहचान लिया।

अब उसे उसका हक वापस दिलाना है। वो सब जो उससे उस मनहूस रात ने छीन लिया था। शायद यही था वह मकसद जिसे पूरा कराने मेरी किस्मत मुझे यहां खींच लाई थी।

अश्विनी

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें महिला उत्थान योजना अन्तगर्त मुफ्त प्रशिक्षण भी

9451647845

हर हर गंगे

हर हर हर हे गंगे मैया,
सिर पर मात घनेरी छैया।
निर्मल पावन पाप नाशिनी,
पतितों के हित मोक्ष दायिनी।
बनना हे माँ सदा सहइया,
हर हर हर हे गंगे मैया।

नारायण के पांव पखारे,
कष्ट सभी के मात निवारे।
मृत्यु परम गोदी है पावन,
पाप शुद्ध करे जल पलावन।
सुमिरन करें कटे यम फइया,
हर हर हर हे गंगे मैया।

श्राप मुक्त करने को माई।
तारण सगर सुतों को आई।
तेज प्रताप सहा ना जाए,
महादेव की जटा समाए।
महिमा गा लगती हूँ पैया,
हर हर हर हे गंगे मैया।

शीतल जल की बहती धारा,
नमन करे तुझको जग सारा।
हिम नग से जोड़ो तुम सागर,
विष लेकर देती पय गागर।
पार लगा माँ मेरी नैया,
हर हर हर हे गंगे मैया।

डा. प्रिया सूफी
होशियापुर, पंजाब

गंगा हमारी माँ

गंगा को अनेक नामों से पुकारा जाता है जिसमें मुख्य तया जाह्वी , शिवाया, हुगली ,उत्तरवाहिनी ,मंदाकिनी आदि प्रमुख है। गंगा भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी में एक है। यह सिर्फ देश की प्राकृतिक संपदा ही नहीं वरन भारतीय जनमानस की आस्था का आधार भी है । यह गंगोत्री से निकलकर वाराणसी, हरिद्वार ,प्रयागराज, कोलकाता ,पटना ,कानपुर ,गाजीपुर में अविरल बहती है।

भारतीय संस्कृति की बात हो और गंगा की चर्चा न हो ये कदापि सम्भव नहीं ।गंगा को हमारे धर्मग्रंथों में जीवनदायिनी ,मोक्षदायिनी ,पालनहार इत्यादि कहा गया है।गंगा की महत्ता और महिमा भारत के तमाम आध्यात्मिक ग्रंथों में लिखी गयी है ।प्राचीनकाल से लेकर आज तक गंगा को भारतीय जनमानस में आदर और श्रद्धा से देखा जाता रहा है । जो गंगा कभी पाप नासिनी मानी जाती थी वही गंगा आज अपने भक्तों की स्वार्थपरता का शिकार हो कर गंदी हो गयी ।

गंगा के बारे में एक बात मानी जाती है कि प्रतिदिन गंगा स्नान करने से शारीरिक व्याधियाँ मिट जाती हैं ।गंगाजल पीने से व्यक्ति के पाप मिट जाते हैं ।इसके पीछे वैज्ञानिक कारण भी है । गंगा में ऑक्सीजन धारण करने की अद्भुत क्षमता होती है ।जिसके कारण उसमें बैक्टीरिया मारने की क्षमता होती है। लेकिन कालक्रम में वहीं गंगा अपने सेवकों की अज्ञानता और लापरवाही का ऐसा शिकार बनी कि इसका जल प्रदूषित हो गया।दुनिया भर का कचरा इसमें फेंका जाने लगा।जिससे गंगा जार- जार अश्रूधार बहाने लगी ।लेकिन अबोल गंगा की म्लान जल देख कर भी किसी ने इसकी सुधि नहीं ली। कतिपय जन इसके लिए आवाज उठाये लेकिन सरकारी सहायता और समर्थन के अभाव में उनका हौसला पस्त होता रहा । गंगा खेती में सहायता प्रदान करती है ,इसलिए वह गरीब किसानों की शुभचिंतक भी है। इसमें नौकायन भी खूब होता है। यह लोगों के रोजी रोटी का साधन भी बनती है।

अतः हम बेहिचक कह सकते हैं कि गंगा जननि ,जन्मभूमि की तरह ही हमारी माँ है ।आज यह प्रदूषित होकर दम तोड़ रही है ।आवशयकता है उसकी जिद को मान लेने की वरना मातृतुल्य गंगा का गुस्सा झेलने को तैयार रहना होगा।

साधना कृष्ण वैशाली ,बिहार।

अभद्रता की हद

प्रकृति का बनाया एक सुकोमल शीतल स्पर्श शक्ति का अपार भंडार के रूप में एक सुंदर रचना है नारी। नारी आज समाज के हर क्षेत्र में काम कर रही है आज वह किसी का मोहताज नहीं है। फिर भी घर समाज में उन्हें समझौता करना ही पड़ता है दोहरी जिम्मेदारी में घिरी कई बार असमर्थता जताते हुए भी विभिन्न परिस्थितियों में अपने आपको ढाल लेती है।समय बदला सोच बदली है आज नारी सशक्तिकरण में अपने आपको साबित कर खड़ा कर लिया है। नारी को भी पूरी तरह से समानता का अधिकार शिक्षा, संस्कृति, धार्मिक स्वतंत्रता,पुरुषों के समान अधिकार मिल चुके हैं। इसका उल्लेख संविधान में भी है शिक्षा, स्वास्थ्य,रोजगार, शोषण पर नियंत्रण और शोषण पर आवाज उठाना भी सिख गयी है।हर जगह नारी सशक्त हो रही है खुलकर आवाज उठाने में लगी है। संविधान में भी देखे तो पुरुषों की तरह नारी को भी समान अधिकार दिए गए हैं। जहां पहले नारी अपनी दुर्दशा पर रोने के अलावा कुछ नहीं कर सकती थी आज पूरी तरह आवाज उठाने और अपना हक जताने से पीछे नहीं हैं।आज हर मुकाम पर अपने आप को साबित कर चुकी है।

भारतीय संस्कृति में भी नारी को बहुत ही सम्मान और महत्व दिया गया है । धरती पर नारी के अनेक रूप हैं। नारी को दुर्गा , काली, चंडी एवं सरस्वती के रूप में मानने वाले लोगों की मानसिकता कहाँ लुप्त हो गई है समझ नहीं आ रहा। नारी की स्थिति पहले की तुलना में काफी हद तक सुधार हुआ है । नारी शिक्षा को बढ़ावा मिलने से प्रगति पथ पर अग्रसर होती रही है। राजनीति हो या व्यवसाय हर जगह नारी की भागीदारी है । नारी के बिना इस संसार में कुछ भी नहीं है । इसके बिना, यह सृष्टि अधूरी है। भारतीय समाज को हमेशा पुरुष प्रधान माना गया । लेकीन अब 21वीं सदी में पूरी तरह से बदलाव आया है । आज नारी पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, फिर भी जो सम्मान, जो इज्जत नारियों को मिलनी चाहिए वह मिल नहीं रही है। जिस तरह के अमानवीय व्यवहारों से वह गुजरती है उसका अंदाजा भी शायद लगाना मुश्किल है। एक तरफ हम उन्हें आगे बढ़ाने की बात करते हैं और दूसरी तरफ अभद्रता की हद पार करते हैं।आजकल महिलाओं,छोटी-छोटी बच्चियों के साथ अभद्रता की सारी सीमाएं टूट गई है।आज एक भी दिन ऐसा नहीं जाता जब हम बलात्कार जैसी अभद्रता की घटना नहीं सुनते हैं। 4 महीने की बच्ची से लेकर महिलाएं तक सुरक्षित नहीं है। आज फिर इक्कीसवीं सदी में पहुँचकर भी समाज की सोच नहीं बदल रही। अपने ही घर में वह सुरक्षित नहीं होती घरों में भी शोषित हो रही है।समाज किस ओर जा रहा एक बार चिंतन करके देखें ।कानून नहीं हमें सोच बदलनी होगी, लड़कों को सिखाना होगा सम्मान करना नारी का। समाज के सभी लोगों और कानून-व्यवस्था से आगे अपेक्षा होगी लाचारी,बेबसी और तड़प से नारी बाहर निकल सके एक समय ऐसा लाएं जहां बच्चियां, औरतें बेखौफ होकर घूमे। आशा है एक सम्मान ,बेखौफ, आजादी और बेबाकपन से जीने का अधिकार जरूर मिलेगा। खुद को बदलें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें भारतीय संस्कृति में नारी के महत्व और सम्मान को बताएं समझाएं ।मां,बहन और बेटीयों के पवित्र रिश्ते को बताएं।मानसिकता बदलेगी तभी सब कुछ बदलेगा।

निक्की शर्मा रश्मि मुंबई

ये सचमुच पढ़ने आए हैं

संघी भी लड़ो,वामी भी लड़ो
नकाबी भी लड़ो,नंगे भी लड़ो
इसको मारो,उसको डांटो
इसको चेपो, उसको काटो
तुमको लड़ना है खूब लड़ो
पर इनसे तुम अब दूर रहो
ये बहुत दूर से आए हैं
ये सचमुच पढ़ने आए हैं।

इसको आजादी लानी है
उसको संस्कार बदलने हैं
इसे भगवे की शान बचानी है
उसे हंसिए से पंख कुतरने हैं
पर इन सबसे अलग थलग
कुछ इन सबके हैं यार नहीं
ये किसी पार्टी के भक्त नहीं
इनमें कोई गद्दार नहीं
बस उनको तुम पढ़ लेने दो
जो सचमुच पढ़ने आए हैं

आंखों में सपने लेकर
ये बहुत दूर से आए हैं
वो बिहार के दूर गांव से है
ये नार्थ ईस्ट से है आई
उसका बापू खेतों में खटे
ये आंखों में भर डर लाई
पर एक चीज तो कामन है
सबकी आंखों में हैं सपने
कुछ बनने की खातिर ये सब
छोड़कर आए हैं अपने
इनके सपने ना बदरंग करो
पढ़ने दो ना तंग करो
ये बहुत दूर से आए हैं
ये सिर्फ पढ़ने को आए हैं

उस को अतीत बदलना है
इसे खुशहाली लानी है
उस को गरीबी हटानी थी
इसको इज्जत कमानी है
इसके सपने में अम्मा आती है
उसको नदी पहाड़ बुलाते हैं
ये घर से आने पर रोती है ।
ये त्योहार में तकिए भिगोते हैं ।

बड़ी कीमत दी है इन्होंने
प्लीज इन्हे पढ़ लेने दो
इनको अपनी ये किस्मत
खुद ही से गढ़ लेने दो

तुमको लड़ना है खूब लड़ो
पर इनसे तुम अब दूर रहो
ये बहुत कष्ट उठाकर आए हैं
ये सचमुच पढ़ने आए हैं।

-सुभाषचेदर

क्रान्तिकारी कामरेड

रेलगाडी पकडने के लिए सुरेखा घर से भोर में ही निकल आयी थी। सुरेखा घर की चौखट को आज पहली दफा पार किया था।उसका मन आसमान से भी ऊँचा हो गया था ।सुबह तीन बजे ही स्टेशन यात्रियों से खचाखच भर गया था।वर्धा जाने के लिए राप्तीसागर एक्सप्रेस में सवार हो गयी।ट्रेन चली तो अपना शहर सिवान पीछे छुटता चला गया ।सुरेखा के जीवन में यह पहला अवसर था, जब घर से अकेली बाहर निकली हो।अब अपना शहर यादों में समीटता जा रहा था ।नये स्टेशनों को बड़ी उत्सुकता से देखती,रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठता । माता -पिता के अरमानों को पूरा करने को संकल्पित होती और ख्यालों में खो जाती । सावन की रिमझिम फुहार पड़ रही थी। पानी की बूंद जैसे सुरेखा के खुशी के फूल झर रहे हो। सुरेखा अपनी नयी दुनिया में गोता लगाकर डूबती-उतराती रही। अगले दिन सुबह ट्रेन वर्धा पहुंच गयी। सुरेखा अपना सामान लेकर स्टेशन से बाहर निकली, चारों ओर से आटो टैक्सी वालों ने घेर कर पूछने लगे मैडम किथ्थे जाने का, सुरेखा बैग से एक लेटर निकाली और पढ़ते हुए आगे बढ़ा दिया।हो मैडम,हिन्दी विद्यापीठ जाने को है क्या?सुरेखा बोली महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, हो मैडम,उसमें दूर - दूर से बच्चे आकर पढ़ते हैं।

सुरेखा सहमती में अपना सिर हिलायी ।सौ रूपये में टैक्सी तय कर पहुंच गयी। विश्वविद्यालय का कैंपस देखकर सुरेखा हताश होने लगी। देश का एकलौता अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय जैसे भुतहा पहाड़ी पर धनेसर काका का बथान हो। विभाग के कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने सुरेखा का हौसला बढ़ाया जिसके पश्चात साहित्य विद्यापीठ के स्त्री अध्ययन विभाग में पी-एचडी उपाधि हेतु अपना नामांकन करायी और महिला छात्रावास में शिफ्ट हो गई।

अभी सुरेखा को वर्धा आये चार दिन हि हुए थे कि कैंपस में मुलाकात एक क्रान्तिकारी शोधार्थी से हो गयी। मझौला कद का गोरा सा युवक, जिसकी काली जुल्फे, गुलाबी गाल ,चेहरा के आधे हिस्से को उसकी दाढ़ी ढ़क लिया था ।ब्रांडेड जिन्स पर फटा हुआ खादी का कुर्ता पहने क्रान्ति की बोझ में इतना दबा था कि उसे दूर से देखने पर ही यकीन हो जाता था। इसे नहाये सिर्फ सप्ताह बीते होंगे।हमेशा उसके शरीर से क्रान्ति की गंध आती रहती थी। लाल गमछा के साथ झोला लटकाये सिगरेट फूंक कर क्रान्ति की चिन्गारी जला रहा था तभी सुरेखा ने कहा 'नमस्ते भैया'। हूंह,ये संघी हिप्पोक्रेसी काहे का भैया और काहे का नमस्ते हम इसी के खिलाफ तो लड़ रहे हैं। प्रगतिशीलता की लड़ाई, समाजवाद की लड़ाई। ये घिसे-पिटे संस्कार ये मानसिक गुलामी के सिवाय कुछ नहीं है। आज से सिर्फ लाल सलाम साथी कहना । सुरेखा ने सकुचाते हुए पूछा आप क्या करते हैं? क्रान्तिकारी शोधार्थी ने कहा हम क्रान्ति करते हैं, जल ,जंगल ,जमीन की लड़ाई लड़ते हैं, शोषितों,वंचितों की आवाज उठाते हैं। क्या

तुम मेरे साथ क्रान्ति में सहयोग करोगी? सुरेखा ने सिर झुकायी और धीरे से कहा नहीं,मैं यहाँ पढ़ने आई हूं। कितने अरमान से मेरे किसान पिता ने यहाँ भेजा है पढ़-लिखकर कुछ बन जाऊ तो समाज सेवा मेरा भी सपना है। क्रान्तिकारी कामरेड ने सिगरेट सुलगाई और बेतरतीब दाढ़ी को खुजलाते हुए कहा यही बात मार्क्स सोचे होते लेनिन और मावो सोंचे होते ? तुमने पाश की वह कविता पढ़ी है सबसे खतरनाक होता है मुर्दा शान्ति से भर जाना,तुम जिन्दा हो सुरेखा ।मुर्दा मत बनो क्रान्ति को तुम्हारी जरूरत है लो ,ये सिगरेट पियो ।सुरेखा ने कहा सिगरेट पीने से क्रान्ति कैसे होगी ? क्रान्तिकारी कामरेड ने कहा याद करो मावो और देरिदा को , वे सिगरेट पीते थे और जब लड़का पी सकता है तो लड़की क्यों नहीं हम इसी की तो लड़ाई लड़ रहे हैं। यही तो साम्यवाद है।मेरी बात गंभीरता से सुनो,कल हमारे प्रखर वक्ता समाजवादी कामरेड फलाना आ रहे हैं हम उनका भाषण सुनेंगे और अपने आदिवासी साथियों के विद्रोह को मजबूत करेंगे। लाल सलाम, मावो, लेनिन जिन्दाबाद-जिन्दाबाद।सुरेखा ने कहा लेकिन यह तो सरासर अन्याय है वे महंगे होटल में ठहरते हैं,वातानुकूलित कमरे में बिसलरी का पानी पीते हुए जल,जंगल,जमीन पर व्याख्यान देते हैं और वे चाहते हैं कि गरीब -मजदूर जनता अपना सब कुछ छोड़कर नक्सली बन जाये और हथियार के बल पर समाज में भय पैदा करे और दिल्ली पर अपना अधिकार कर लें।यह क्या पागलपन है ? उनके अपने लड़के क्यों नहीं लड़ते ये लड़ाई? हमे क्यों लड़ा रहे हैं ? क्या यही क्रान्ति है ? क्रान्तिकारी कामरेड को गुस्सा आ गया,उसने कहा तुम पागल हो जाहिल गंवार लड़की,तुम्हें यह सब बिल्कुल समझ में नहीं आएगा, तुमने अभी न दास कैपिटल पढ़ा है न कम्युनिस्ट मैनूफेस्टो, न तुम साम्यवाद को ठीक से जानती हो और न ही पूंजीवाद ।सुरेखा ने प्रतिवाद करते हुए कहा लेकिन इतना जरूर जानती हूं कामरेड कि मार्क्सवाद शुद्ध विचार नहीं है। इसमें मैन्यूफैक्चरिंग फॉल्ट है।यह हीगल के द्वन्वाद,इंग्लैण्ड के पूंजीवाद और फ्रांस के समाजवाद का मिला-जुला खिचड़ी है जो न भारतीय हित में है और न ही भारतीय जनमानस से मैच करता है।

क्रान्तिकारी कामरेड ने तीसरी सिगरेड जलायी और हँसते हुए कहा ये बुजुर्वा हिप्पोक्रेसी तुम कुछ नहीं जानती ये सब अभी छोड़ों। तुम्हें अभी और पढ़ने की जरूरत है। कल आओ,हम गोरख पाण्डेय का वह गीत गायेंगे हिलेला झकझोर दुनिया, समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई । उदास मौसम के खिलाफ अगले दिन खूब लड़ाई हुई।पोस्टर बैनर के साथ नारे लगे । सामूहिक रूप से डफली बजाकर जनगीत हुआ और क्रान्ति साइलेन्ट मोड में चली गयी तब तक सिगरेटों से निकलती हुई धुंआ गोल-गोल चक्कर काटते उड़ती जा रही थी।क्रान्तिकारी कामरेड ने कहा सुरेखा,ये तुम्हारा नाम बड़ा कम्युनल लगता है सुरेखा यदुवंशी ।तुम्हारे नाम से मनुवाद की बू आती है, कुछ प्रोग्रेसिव नाम होना चाहिए। आई थिंक कामरेड टिसा ,सटीक रहेगा। सुरेखा अपना कामरेडी नामकरण संस्कार सुनकर हँस रही थी तब तक क्रान्तिकारी कामरेड ने सुलगती सिगरेड को आगे कर दिया । सुरेखा दूर हटते हुए कहा नहीं , ये नहीं हो सकता। क्रान्तिकारी कामरेड ने कहा तुम पागल लड़की हो क्रान्ति का पथ सिगरेट से ही शुरू होता है और शराब से याद करो मार्क्स और लेनिन को ,सबने शराब पीने के बाद ही क्रान्ति किया है और तुम सिगरेट पीने से कतरा रही हो। सुरेखा ने कहा लेकिन सिगरेट तो विदेशी लग

रहा है।अभी कुछ देर पहले हम अमेरिका को जी भर के गरिया रहे थे । क्रान्तिकारी कामरेड ने सिगरेट मुंह के पास सटाकर काजू का नमकीन उठाया और कहा अरे वो सब छोड़ो पागल समय नहीं है क्रान्ति करो,दुनिया को तुम्हारी जरूरत है, याद करो कार्ल मार्क्स को लेनिन को ।सुरेखा का सारा विरोध मार्क्स,लेनिन और साम्यवाद के मोटे-मोटे सूत्रों के बोझ तले दब गया ,सुरेखा कुछ समय बाद नशे में थी ।क्रान्तिकारी कामरेड ने क्रान्ति के अगले सोपान पर जाकर कहा कामरेड टिसा ,अब यह सूट की जगह जिन्स और कुर्ती पहनो। सुरेखा ने कहा इससे क्या होगा ? क्रान्तिकारी कामरेड ने उसका हाथ दबाते हुए कहा अरे,तुम महसूस करो कि आजाद हो,ये गुलामी का प्रतीक है। यह पितृसत्ता के खिलाफ तुम्हारे विरोध का तरीका है। तुम नहीं जानती ,हजारों वर्षो से पुरूषों ने स्त्रियों का शोषण किया है।हम जल्द ही एक प्रोस्टेट करने वाले हैं फिलिंग फ्रिडम थ्रो ब्रा ।जिसमें लड़कियां कैम्पस में बिना ब्रा पहने घुमेंगी ।सुरेखा अकबका गई । यह सब क्या बकवास है कामरेड ब्रा न पहनने से आजादी का क्या रिश्ता ? क्रान्तिकारी कामरेड ने कहा यही तो स्त्री सशक्तिकरण है कामरेड टिसा देह की आजादी । जब पुरूष कई स्त्रियों को भोग सकता है तो स्त्री क्यों नहीं क्या तुम उन सभी शोषित स्त्रियों का बदला लेना चाहेगी ? सुरेखा ने कहा हॉ,लेकिन कैसा बदला ? क्रान्तिकारी कामरेड ने कहा देखो,जैसे पुरूष किसी स्त्री को भोगकर छोड़ देता है , वैसे तुम भी किसी पुरूष को भोगकर छोड़ दो । मुझे ही पुरूष का प्रतीक मान लो और हजारों सालों से शोषण का शिकार हो रही स्त्री का बदला लो । सुरेखा आहिस्ता-आहिस्ता गिलास खाली कर रही थी ।फिर देर रात तक लाल सलाम और क्रान्ति के साथ स्त्री सशक्तिकरण का दौर चला कामरेड ने दास कैपिटल को किनारे रख कर कामसूत्र का गहन अध्ययन किया।

डा० मन्नु राय सिवान

कल और आज गंगा

पहले बहा करती, हीरक हार सी गंगा।
अब, भीत नारी सी दुर्बलकाय है गंगा।।
दिखा स्वर्गमार्ग, करती थी पूर्ण मनोरथ।
अब खो रही देखो स्वयं का मान है गंगा।

ब्रह्मकमण्डल में जो होती थी शोभित।
गंदी नालियों का मिलन स्थान है गंगा।।

सद्यस्नात सुंदरी उदधि-मिलन को आतुर।
पर बँध गए घाट अकेली रोती है गंगा।।

गंगे आरती में झूम, नाचते-गाते थे लोग ।
आज उसकी आरती भी व्यापार है गंगा।।

डा. ज्योति मिश्रा
बिलासपुर ;छत्तीसगढ़द्ध

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें महिला उत्थान योजना अन्तगर्त मुफ्त प्रशिक्षण भी
9451647845

मंदिरों के नहीं मौत के पट बंद हैं

जब से देश में लाकडाउन हुआ है और मंदिरों को बंद कर दिया गया है तब से सोशल मीडिया पर कई तरह के बेहूदा व्यंग्य पढ़ने को मिल रहे है।सबसे ज्यादा मजाक ईश्वर के दरवाजे बंद होने का बनाया जा रहा है। लोग लिख रहे है कि मंदिरों से अच्छा तो अस्पताल बनवाने चाहिए जो इला काम आ जाते तो मै कहना चाहूंगी, भाइयों अस्पतालों में तो आपकी बीमारी का इलाज होता है लेकिन मंदिर में आपके मानसिक विचारो का इलाज होता है। जहां इंसान को मानसिक शांति मिलती है,हताश निराश इंसान को जब कोई राह नजर नहीं आती है, तब एक ईश्वर का दर ही है जहां आपको पनाह मिलती है, और रही आज की परिस्थिति की बात तो परमपिता ने ही आपको अब तक बचा रखा था वरना इतने महीनों में क्या से क्या हो जाता। ये आप दूसरे देश के आंकड़ों से भली भांति समझ सकते है और कुछ लोगो ने पोस्ट डाल रखी थी कि संकट के वक्त भगवान ने भी अपने भक्तों से मुंह फेर लिया। पर मै पूर्ण विश्वास से कह सकती हूं कि या तो ये लोग हिन्दू धर्म से संबंधित नहीं है या ये वो नास्तिक लोग है जो बेकार की अफवाहों के शिकार होकर अपने ही धर्म से विमुख होते जा रहे है। मै उन सभी बेहूदा लोगो को एक किस्से के माध्यम से समझाना चाहूंगी।

एक हमारे कोई चिर परिचित जानने वाले थे और उनका बेटा बचपन से ही पढ़ाई में कमजोर और बेवजह के कामों में अपना वक्त जाया करता था।माता पिता की इकलौती संतान थी और माता पिता के पास रुपए की कमी नहीं थी तो वो बेटा अपना पूरा समय मौज मस्ती में ही व्यतीत करता रहता,गलत संगति में रहकर गलत आदतों में शुमार हो गया था।हर तरह के गलत शौक उसने पाल लिए थे।धीरे धीरे वक्त व्यतीत होता गया और जब वो जवान हो गया तो सबने कहा कि इसकी शादी कर दीजिए हो सकता है शादी के बाद यें सुधर जाएगा,माता पिता के पास रुपए की कमी नहीं थी तो एक अच्छी लड़की देखकर उसकी शादी भी कर दी गई। पर शादी के बाद भी उसे अपने माता पिता और पत्नी की भी तनिक भी परवाह नहीं थी।

माता पिता को हरवक्त अपने इकलौते बेटे की चिंता सताती रहती थी।वो अपने बेटे से बहुत प्यार करते थे और उसके भविष्य की चिंता करते हुए उन्होंने एक बड़ा कदम उठाया। एक दिन सुबह पिता ने अपने बेटे को कहां की वो अपनी पत्नी को लेकर कहीं और चला जाए और खुद कमा कर अपना जीवन यापन करे।पिता ने उन्हें कुछ दिनों की मोहलत दे दी और कुछ दिनों बाद उन्हें घर से बाहर निकालकर अपने दरवाजे बंद कर लिए।दोनो माता पिता जो कभी अपने बेटे से दूर नहीं हुए थे वो इस फैसले से बहुत दुखी थे और अकेले में बहुत रोते थे पर अपने बेटे के भविष्य और उसे सुधारने के लिए उन्होंने ये कठिन फैसला लिया था।वैसा ही आज हमारे साथ हुआ है।

इंसान अपने आप को भगवान समझने लग गया था,अपने जन्म देने वाले माता पिता की अवहेलना करना शुरू कर दिया। परिवार से ज्यादा रुपए को महत्व देना शुरू कर दिया था। गाय को जिसे माता का दर्जा दिया उसको ही काट काट कर तड़पा रहे थे।गंगा जो भारत की संस्कृति का मूल आधार है उसे अपने स्वार्थ के लिए अपवित्र

कर रखा था और छोटी छोटी बच्चियां भी हवस के भेड़ियों का शिकार हो रही थी,दुधमुंही बच्चियों से लेकर 80 साल तक की वृद्धा भी घर में सुरक्षित नहीं थी। कोख में भी बेटी के प्राणों का हनन किया जा रहा है।उसने प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना शुरू कर दिया था,निर्दोष जीवों को सताना इंसान के लिए खेल बन गया था।एक जिंदा जीव को मारकर खाना भी इंसान के पसंदीदा भोजन में शामिल हो गया था परमपिता अपनी हाथो रची हुई सृष्टि को इस दयनीय हालात में कैसे देख सकता था? पल पल घट रहे ये हालात देखकर परमपिता ने भी एक कठिन निर्णय लिया है वो अपने बच्चो से प्यार भी बहुत करते है लेकिन वो अपने बच्चो के भविष्य को भी उज्ज्वल देखना चाहते थे और उस सुधारना भी चाहते थे। इसलिए परमपिता परमेश्वर ने अपने दरवाजे हमारे लिए कुछ समय के लिए बंद कर लिए है।वो भी हमसे बिछड़कर बहुत दुखी है पर सिर्फ हमें सुधारने के लिए हमारे परमपिता ये कदम उठाया है। ईश्वर ने हमें सुधरने का अवसर दिया है।अगर हम सुधर जाएंगे तो अपना भविष्य उज्ज्वल कर लेंगे और अब भी ना सुधर पाए तो परमपिता अगला क्या कदम उठाएंगे?ये कोई नहीं जान सकता।

अंतिम व सबसे महत्वपूर्ण बात कहना चाहूँगी कि मंदिर बंद होने का कारण देवताओं का बीमार पड़ना नही हैं। सबने सुना होगा कि कहा गया है दुरूख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोई, जो सुख में सुमिरन करें दुख काहे को होय। इस दुख की घड़ी में हर आदमी मंदिरो की तरफ भागने को व्याकुल है। ऐसे में यदि मंदिर के पट खोल दिये जाये तो क्या होगा इसकी कल्पना भी आप नहीं कर सकते हैं। इस लिए भगवान के पट हमारी सुरक्षा के लिए बंद हुए न कि भगवान की सुरक्षा के लिए। रही बात धर्म की तो मंदिरो की तो बात छोड़ीये हमारे धर्म के मंत्रों एवं श्रृधा में इतनी ताकत है कि वह किसी भी विप्पति का नाश कर देगी बस उसके प्रयोग का ढ़ग होना चाहिए। बंद मंदिरो के उपहास उड़ाने वालो अभी आपकी समझ और जानकारी इतनी श्रेष्ठ नहीं हुई कि आपको मंदिर की संरचना और मंदिरों की अहमित पता चलें। इस लिए अधजल गगरी छलकत जाये की कहावत मत चरितार्थ करीये। हमारा धर्म हमारे मंदिर सदैव से मानव सम्यता के विकास में, मानव हित में कार्य किये हैं करते रहेगें।

प्रियंका गौड़ जयपुर

दुल्हन की तरह

करती हूं मैं यही दुआ
दिन और रात
ना छूटे साथ हमारा
पिया का रहे हाथों में हाथ
की थी मैंने यही कल्पना
हो जाऊंगी मैं पूर्ण समर्पित
कष्ट उठाऊंगी सारे मैं
एक दूजे के लिए
बस कर पाऊं मैं उसका
प्यार और स्नेह अर्पित
करूंगी सोलह सिंगार मैं
सजूगी आज दुल्हन की तरह
रखूंगी पूरे मन से व्रत
साजन मिले हर जन्म में ये ही
करती हूं मैं यही दुआ
दिन और रात
ना छूटे साथ हमारा पिया
तारे हाथों में हाथ
सोने चांदी के गहने
सजाते हैं केवल तन को
लेकिन जब समर्पित होते हैं
दो हमसफर एक दूजे के लिए
तो एक अद्भुत खुशी होती है
दोनों के तन और मन को

संगीता शर्मा
मेरठ

होशियार घरनी

ये सब कैसे ? इस महीने घर खर्च के लिए मैंने तुम्हें पैसे भी नहीं दिए ! फिर ,इतने इंतजामात कहाँ से ?“ जिज्ञासावश मैंने राधा से पूछा। ”पहले इसे चखकर बताइए, कैसा बना है ?“ राधा ने हलुए, पकौड़े और चटनी से भरा प्लेट मेरे आगे बढ़ाते हुए कहा। आखिर इतनी सारी सामग्री राधा कहाँ से लायी ? मिल में हड़ताल होने के चलते मुझे दो माह से तनख्वाह भी नहीं मिली है। ओह! ये हड़ताल ! इसे अभी होली में ही होना था! सोचा था राधा को एक नई साड़ी लाकर दूंगा! कहाँ से मजदूरों को बोनस मिलता, तनख्वाह भी नदारद। मजदूरी करना, गुलामी करने से कम थोड़े ही है।

”अरेऽऽऽ..मिस्टर, कहाँ खो गये ? कुछ बताया नहीं।“ समझ गई, जरुर कुछ गडबड़ है। ”नही नहीं..बहुत स्वादिष्ट है। पहले ये बताओ, तुम्हारे पास तो पैसे नहीं थे, आखिर तुम इतना सारा सामन कैसे ले आयी ? प्लेट का हलुआ चखते हुए ,प्रश्नवाचक चिन्ह से मेरी ओर देखकर वो बोले।”अच्छा ! तो अब मुझे हिसाब भी देना पड़ेगा।“ सुनिए जी , दादी ने बचपन में मुझे एक कहानी सुनाई थी, जिसका सार था। ’खुश रहने के लिए कभी पैसों को राह का रोड़ा न बनाने दें।’ मैंने वही किया। पिछवाड़े, अपने बारी से एक कद्दू और प्याज साग तोड़कर ले आयी । कद्दू का झट से हलुआ बनाया ,प्याज साग के पकौड़े और घर में पड़े खटाई की चटनी । और ये देखिए, थोड़े बचे हुए मैदे में पीसी हल्दी और सिंदूर मिलाकर गुलाल भी बना डाली।

अरे आप इतने परेशान क्यूँ हैं ? आज न कल तनख्वाह तो मिलेगी ही। हमारी शादी की यह पहली होली है। बताइये ? इसे क्यूँ फीका होने दूँ हा हा हा, कहते हुए राधा ने कटोरे का सारा गुलाल मेरे ऊपर उड़ेल दिया।चेहरे से झड़ रहे गुलाल को झट से समेट कर मैंने उसके गालों पर लेपते हुए खुशी से चिल्लाया, अरे..तू तो मेरी होशियार घरनी है।

मिन्नी मिश्रा पटना

पडोसी की पत्नी–इंदु

सुबह जागते हीं सोचा की आज काम से फुर्सत होके डाक्टर के पास जाऊँगी ! बहुत दिनों से हाथ-पैर मे सुजन हो रही है. जिस कारण मन चिंता में रहता है.बच्चों को स्कूल भेज कर.पति महोदय को नाश्ता दिया और बोली की आज तुम दफ्तर से जल्दी अभी मेरी बात पुरी भी नहीं हुई की पति महोदय का तुम दिन भर घर में पडी- पडी क्या करती रहती हो? थोडा काम क्या कर दी.. बीमारी का नाटक शुरू, सुबह-शाम,रात-दिन मुँह लटकाये घूमती रहती हो। जाओ तो वहीं चेहरा ,आओ तो वहीं, सोने जाओ तो वहीं। कहो तो सारा काम धंधा छोड के तुम में हीं लगा रह। कभी शांति से नहीं रहने देती हो। क्या-क्या हो गया है तुमको? तुम ऐसी तो नहीं थी? किसकी हवा लग गई तुमको? मैं अवाक आँखो में आँसू भरे उनकी ओर देखे जा..इन्हे क्या हो गया अचानक... उन्होंने हँसते हुए कहा! अरे तुम कभी लडने का मौका हीं नहीं देती..तो क्या पडोसी की पत्नी से हद हैं ये भी...

इंदु पटना

अपने लिए जीना-सीमा

नारी सशक्तिकरण के इस युग में नारी द्वारा घरेलू कार्य के बाद बचे हुए समय में अपने बुने हुए स्वप्न संसार की, अपने सपनों को हकीकत में बदलने की चेष्टा उसे स्वयं करनी होगीद्य अपनी मदद उसे स्वयं करनी होगी एक बहन बेटी पत्नी मां से ऊपर उठकर खुद के लिए खुद को सोचना होगा, महिला दिवस पर समस्त नारियों से आह्वान हैं कि 'नारी के लिए नारी के द्वारा नारी का प्रकाश पुंज बने ''

खुद पर हक हो अपना'

खुद पर सबसे पहला हक अपना होना चाहिए हम जहाँ है जैसे भी हैं खुद की सुने जितना कर पा रहे है उसी में खुष रहे और जो नहीं कर पा रहे है उनके लिए दुखी न हो सबसे पहले अपने लिए सोच अपने मन पर अपना अधिकार रखे। जहाँ भी जैसे हो, अपनी खुद की सुने, खुद के लिए जियें।आज की नारी आगे बढ़ी है बहुत आगे बढ़ी है वक्त के साथ चलना और खुद की अपडेट करते रहना आज उसकी आदत में शुमार ही चुका है स्वयं को बेहतर सिद्ध करने की हर संभव कोषिष करती है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि अपना अस्तित्व ही भूल जाय, सब के लिए सोचे लेकिन सबसे पहले अपने लिए सोचे सब की इच्छाओं का ध्यान रखे पर अपनी इच्छाओं का भी सम्मान करें। जिस दिन सारे दबाव से मुक्त कर लेंगे, उस दिन सारे दबाव से मुक्त कर लेंगे, उस दिन अपने होने का एहसास कर पायेंगे।

'खुद के लिए वक्त'

यह सच है बहुत कुछ पाने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि आप अपना अस्तित्व ही भूल जाय सकुन से बैठकर दो पल अपने लिए सोचने का टाइम नहीं है सुबह उठना दिनभर काम करना फिर बंधी बधाई दिनचर्या जीना कामयाब जिदंगी की चाह व पैसा कमाने की ख्वाहिश ने हमारे निजि क्षणों को बहुत प्रभावित किया है, अब आपको अपने लिए वक्त निकालना होगा अपने लिए जीना होगा अपनी इच्छाओं अपनी आंकाक्षाओं को पूरी करनी होगी।

रिलेक्स रहना सीखें'

परिवार कैरियर में तालमेल बिठाती आज की नारी वाकई काबिले तारीफ है आदर्श नारी बनकर सबका दिल जीत रही है दूसरो के लिए जीना अच्छी बात है पर स्वयं के लिए खुद को सोचना होगा, अपनी पसंद नापंसद ख्याल रखे अपने को समय दे रिलेक्स रहे और सुपर उमन बनने की बजाए घर के सदस्यों की मदद ले इसमें आप रिलेक्स भी रहेगी और घर का काम भी हो जाएगा।

जी खोलकर जियो'

जिदंगी जीने के लिए नहीं बल्कि जिंदगी जीती है इसलिए जीये अपने आज में जाये छोटी-छोटी बातों का लुफ्त उठाएं खुशी के छोटे-छोटे अनमोल पलो को सहेजकर रखिए हमेशा कमियों का रोना न रोये, आपको जो चिंता है उसकी कद्र करे और जिंदगी को बेहतर बनाने की कोशिश करे, खुशी आपके अंदर है आपके मन के किसी कोने में आपको बस उसे महसूस करना है और जीवन को खुलकर जीना है।

समय के साथ चले'

सफलता विफलता जिंदगी का हिस्सा है हमेशा सफलता मिले जरूरी नहीं है, कई बार घटना और परिस्थिति पर हमारा बस नहीं होता कई बार दबाव में जरूर गलत फैसले भी ले लेते है, मगर उस पर बैठकर आंसू नहीं बहाया जा सकता गलतियों से सबक ले, गिरो संभलो, खड़े हो और चलते रहो, बस रूको नहीं क्योंकि जहाँ भी रूके, वक्त वही से आगे निकल जायेगा।

फिटनेस बरकरार रखे'

हर स्त्री अपने आप के लिए खास होती है अगर आप फिट रहेगी तो अपने आप आपको अच्छा लगेगा मन के साथ तन की सुंदरता बनाए रखे सुबह की सैर करे नियमित योगा एक्ससाइज करे सही खान-पान रखे

नियम संयम से रहे चौन की नींद सोये अपने आप को निखारे-संवारे स्वस्थ्य व सुन्दर दिखे इससे अपने आप आत्मविश्वास बढ़ेगा।

प्रोफेशनल की मदद ले'

स्वालंबन और आत्मविश्वास के दहलीज पर खड़े होकर आप अपने घर परिवार के लिए बहुत कुछ कर रही है ऐसे में कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, खुद को कमजोर न समझे अगर मन में दुविधा है कोई परेशानी या डिप्रेसन है तो लोगों से बात करे या फिर किसी प्रोफेशनल की मदद लेने में संकोच न करे सही समय पर सही निर्णय लेकर अपने आप की मदद करे।

'बदले नजरिया'

ज्माना बदल गया है नये जमाने की नई तकनीक अपनाकर आप खुद को अपडेट रखे, सबसे पहले आप सोशल स्किल डेवलप करे जैसे नये-नये लोगों से मिले-जुले पुराने परिचितों से फिर संपर्क करे, प्राथमिकता से हिसाब से काम करे और अनावश्यक फोन काल्स, चौटिंग, सोशल नेटवर्किंग में ज्यादा समय न गवांए हर समय बदलाव के लिए तैयार रहे।

बस आज से अपने लिए जीना है ,अपनी इच्छाएं पूरी करनी है खुद के लिए कुछ करनी है, हर सुबह अपने आप से कहे, मैं भाग्यशाली हूँ कि एक और दिन मुझे अपने लिए जीना है इसे व्यर्थ नहीं करना है बल्कि इसे सजाना है संवारना है अपराधबोध से परे होकर आत्मविश्वास के साथ अपने आप पर अपना हक जताना है,तभी महिला दिवस मनाने की सार्थकता है।

सीमा निगम रायपुर

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें महिला उत्थान योजना अन्तगर्त मुफ्त प्रशिक्षण भी

9451647845

प्रियतम को आने दो

मैं नेह सुधा बरसाऊँगी
घन केश घटा लहराऊँगी
प्रियतम को आने दो..... !!
प्रियतम को आने दो..... !!

पाँवों में प्रिय रुनझुन पायल
कजरारे नैनों में काजल
चूड़ी कंगना खनकाऊँगी
प्रियतम को आने दो..... !!
प्रियतम को आने दो..... !!

पोर- पोर को मै छू लूँगी
मस्त पवन के सँग झूमूँगी
पुष्प कली सी मुस्काऊँगी
प्रियतम को आने दो..... !!
प्रियतम को आने दो..... !!

मोर पपीहा दादुर बोले
वन उपवन जब मधु रस घोले
मैं हाथ हिना रच आऊँगी
प्रियतम को आने दो..... !!
प्रियतम को आने दो..... !!

सात सुरों के रस घोलूँगी
सब कुछ नैनों से बोलूँगी
प्रिय अंग अंग लग जाऊँगी
प्रियतम को आने दो..... !!
प्रियतम को आने दो..... !!

पुष्प लता शर्मा
दिल्ली

जपते रहें नारी उत्थान की माला

सबसे पहले मैं आप सभी को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देती हूँ। आज भारत ही नहीं विश्व में जब जब महिला दिवस आता है महिलाओं के हित की बात होती है। कोई भी मंच हो चाहे राजनीति का मंच हो, समाज सेवा का मंच हो या फिर साहित्यकारों का या शिक्षा जगत का मंच हो, नारी उत्पीड़न एवं बेटी बचाओं के नाम पर तमाम बातें होती हैं। परन्तु महिला दिवस का सूरज ढला नहीं कि वह बातें फिर कहं विलुप्त हो जाती हैं ? मुझे समझ ही नहीं आया। महिलाओं पर हो रहे अत्याचार नये नहीं हैं ये सदियों से हो रहे हैं। यहां मैं एक बात स्पष्ट रूप से कहना चाहूँगी कि आदिकाल में रामायण के माध्यम से जो सीता पर अत्याचार की बात सुनी मैं उसे अत्याचार की श्रेणी में नहीं रखती। वह तो एक लीला थी, देव लीला। भगवान राम बन में रहते हुए भी बहुत से कार्य पूरा नहीं पाये जिसको उन्होंने सीता को माध्यम बना कर पूर्ण किया। इस लिए उसे हटाकर मैं अपनी बात रखना चाहती हूँ। ९० के दशक के बाद और खास तौर से कहें तो 20वी शताब्दी में नारी शिक्षा और नारी अधिकार की बात अपने चरम पर है। हर मॉ-बाप अपने बेटियों को पढ़ा लिखा कर इस काबिल बना रहा है कि उसकी बेटी समाज में स्थान बना सकें। परन्तु वही बेटी का बाप जब एक पति के रूप में आता है तो उसकी सोच न जाने कहां चली जाती है? मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि यदि आज नारी का उत्थान कही से रूका है तो वह है उसका परिवार। आज भी परिवार में नारी की दशा अच्छी नहीं हैं। वह समाज की हिंसा की तो शिकार बाद में हो रही है पहले वह परिवार की हिंसा का शिकार हो रही है। परिवार उसके पैरो में बेडियां डालने का काम कर रहा है। परिवार ही उसकी सोच को जकड़ कर रखा है। बाहर के मंचों पर, समाज के बीच में बड़ी बड़ी बाते करने वाला पति आज इस आधुनिक युग में भी अपनी पत्नी का मानसिक उत्पीड़न कर रहा है। अपनी पत्नी को बच्चों के सामने मारने पीटने का काम कर रहा है। पति कितना भी पढ़ा लिखा क्यों न हो, किसी भी पद पर क्यों न हो वह पत्नी को समान्ता का अधिकार देने को तैयार नहीं। जरा गंम्भीरता से सोचीये कि पति द्वारा जब पत्नी को पीटा जाता है तो वह अपने जख़्मों के निशान कैसे छुपाती होगी ?अपने बच्चों को, अपने कलिग को वह क्या बताती होगी कि वह जख़्म कैसे लगें? क्योंकि नारी मन अपने पति को किसी के आगे रूसवा नहीं कर सकती। पति चाहे लाख जालिम सही वह पति के खिलाफ एक अक्षर नहीं सुन सकती। आज भी नारी की यह महानता है कि मार भी खाती है तो मुस्कुराते हुए। बद्दूआ भी देगी तो आशीर्वाद की तरह। इस लिए शायद उसे शास्त्रों में गृहणी का दर्जा दिया गया, भर्ता का दर्जा दिया गया है। परन्तु यह कब तक चलेगा, ये सोचना भी आप सब को होगा।

कब तक पति जो बड़ी बडी बाते कर के समाज में अपना उच्च स्थान बनाये हुए है उसको बचा पायेगी ? । आज मुझे एक फिल्म के एक बोल याद आ रहे हैं जिसमें एक सह नायक कहता है कि जम्मींदार की भैस दूध न दे तो हम पीटते है, जम्मींदार की गाय चारा न खाये तो हम पीटते हैं। जम्मींदार के खेत में पैदावार न हो तो हम पीटते हैं। यही हाल आज पत्नी का है। परिवार मे कसूर चाहे उसके ससुराल पक्ष के घर का हो, उसके बेटे बेटी समाज का हो या उनसे माईके के रिश्तेदारो

का हो, कोप भाजन और शरीरिक पीड़ा तो केवल पत्नी को उठानी पड़ती है। जख़्म के निशान उसके बदन पर आते है। पूछना चाहती हूँ आज मैं इस समाज से कि पत्नी नाम के इस रिश्ते की खता क्या है ? क्या वह नारी उत्थान से अलग है ? क्या उसकी कोई अपनी जिंदगी नहीं हैं ? उसके अपने सपने, उसकी अपनी सोच नहीं हैं? हर कदम पर रोक टोक ठोकर बना कर क्यों उसकी प्रतिभा उसके सपने को पति नामक पुरूष अपने स्वार्थ की चक्की में पीस दे रहा है?

आप मुझे बता दीजिए कि जब घर में ही नारी की इज्जत और उसके विचारो उसके सपनो का मोल नहीं तो फिर समाज में यह बाते कैसे आयेगी? हम जपते रहें नारी उत्थान की माला, लेते रहे बराबरी का हक। आज यह सब देख कर मुझे गालिब का एक शेर याद आ रहा है।

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन दिल को बहलाने के लिए गालिब, ये खयाल अच्छा है इसी के साथ मैं अपनी बात समाप्त करती हूँ और आशा करती हूँ कि कभी न कभी तो वह दिन आयेगा। जब हम होगें हमारी सोच होगी। हमारे रास्ते होगें।

सरिता सिंह भागलपुर बिहार

हे पापनाशिनी

सुभारती रची बसी स्वनाम धन्य तारिणी।
सजीवनी सुनादिता सदा सदा सुहासिनी।।
हिमालये प्रवाहिनी सुदुग्ध धार वर्षिणी।
प्रणाम बार बार है तुझे हे पापनाशिनी।।

सुयत्न पूर्ण स्वर्ग से धरा सँवारने बही।
भगीरथी हिमाद्रि तुंग श्रृंग गोद में गही।।
सुधामयी तरंग नाद गीत क्लेश हारिणी।
प्रणाम बार बार है तुझे हे पापनाशिनी।।

कहीं प्रचंड वेग तो कहीं बहे सुशांत ही।
भरे प्रमोद प्राण में हरे निराश क्लांत ही।।
सुदर्शना जटा शिवे विहारिणी सुपाविनी।
प्रणाम बार बार हैं तुझे हे पापनाशिनी।।

–आभा मेहता
अहमदाबाद (गुजरात)

साहित्य सरोज पत्रिका के ई पोर्टल पर अपनी भी रचनाएं भेजें

7068990410

।

पेरिय पुराणम या महा पुराण

तमिल साहित्य में चेक्किार द्वारा रचित महापुराण शैव संतों की जीवनी का अत्यंत महत्वपूर्ण संग्रह माना जाता है। इसका रचनाकाल करीब आठवीं सदी से बारहवीं सदी के बीच का आंका जाता है किंतु इतिहासकारों की मान्यता के अनुसार यह बारहवीं सदी ही है। इसकी रचना के पीछे एक प्रसि) लोक गाथा है जिसकी कहानी निम्न प्रकार हैः

अनपायन चोल राजा एक शिव भक्त थे पर वे चिंतामणि नामक पुस्तक में एक जैन राजा जीवराज की जीवनी पढ़कर खूब प्रभावित हुए। इस पर शिव भक्तों ने राजा से प्रश्न किया कि जब शैव संतों की गाथाएं इतनी पवित्र और प्रसि) थीं तो एक सामान्य जैन राजा की प्रशंसा क्यों? उन्होंने चिंतामणि के प्रति राजा की अभिरुचि को नीम रस से तुलना की जबकि शैव संतों की जीवनी ईख के रस के समान था।

राजा ने पूछा,''यह पुस्तक कहां है? किसने लिखी है? किसने पढ़ी है?किसने सुना है?किसने इसकी चर्चा की है?कृपया मुझे अवगत कराएं ताकि मैं भी इसे पढ़कर लाभान्वित हो सकूं।''तब वहां उपस्थित चेक्किार ने समझाया कि तिरुवारूर के शिवजी ने अपने मित्र एवं भक्त बने सुंदरमूर्ति को आदेश दिया कि वह उनका स्तुतिगान अपने भक्तों के सेवक के रूप में करें। इसकी पहली पंक्ति ही भगवान के निर्देश के अनुसार प्रारंभ होता है जिसका अनुवाद हैः मैं तिल्लै यानि चिदंबरम के ब्राह्मणों के सेवकों का सेवक हूं।ऋतिल्लै वाृ अंदणर तम अडियार्कुम अडियनऋ।
सुंदरमूर्ति के गाए ग्यारह पदों में 63 शैव संतों की गाथाएं प्रस्तुत हैं। इन अनूठी गाथाओं की प्रंशंसा देखकर राजा अनपायन ने कवि सेक्किार को गद्य शैली में इन संतों की जीवनी लिखने का निर्देश दिया। इस पर सेक्किार सीधा चिदंबरम गए और भगवान नटराज से प्रार्थना की कि वे उन्हें अपनी इस परियोजना में अपना दिव्य मार्गदर्शन दें। इस पर अचानक वहां उपस्थित सभी भक्तों ने गर्भगृह से एक दिव्य आवाज सुनी,''उलकेल्लाम उणर्न्दोर्करियवर'' इन शब्दों से प्रारंभ करो।''अर्थात् ''जिस शक्ति को बुद्धिमान व्यक्ति भी पहचान न सके।''

अनपायन चोला महाराजा को जब इस चमत्कार की सूचना मिली तो वे तुरंत चिदंबरम गए और सेक्किार के पैर पड़कर महापुराण अर्थात् 63 शैव संतों की गाथाएं उन्हें और सभी शिव भक्तों को सुनाने की विनय पूर्वक आग्रह करने लगे। तब तमिल वर्ष का पहला महीना चौत्र था।

भगवान नटराज का जन्म नक्षत्र आर्द्रा था और युवा संत तिरुज्ञानसंबंदर जिसे देवी पार्वती जी ने स्तनपान करवाया उसका भी नक्षत्र चौत्र का आर्द्रा ही था,इसलिए चेक्किार ने महापुराण का पाठ उसी दिन आरंभ कर अगले वर्ष के उसी दिन संपन्न करने का निश्चय किया।यही पेरिय पुराणम या महापुराण के नाम से जाना जाता है।

डॉ.जमुना कृष्णराज
चेन्ऩई तमिलनाडु

मो.नंः9444400820

कचनार के फूल - अपराजिता अनामिका

जाने कितनी बार , कितनी ही बार उन नंबरों पर अंगुलियां थिरकती रहीं। शायद इन बेजान नंबरों मे किसी खास अपनेपन के एहसास तलाश रहीं थीं। मगर क्या इतने सालों बाद वो एहसास बाकि था भी या कहते हैं कि बा-बुलंद इमारतों के खंडहर सालों साल सुलगते से दबे पड़े रहते हैं और वक्त की जरा सी हवा मिलते ही लपटों का रुप अख्तियार कर लेते हैं । पुरसुकून वर्तमान के सामने अपनी खलिश समेटे । कोई पुरानी किताब खुल गयी थी जैसे जिसे ओढ़ी हुई समाजिकता के दीमक चाट चुके थें ।जरा सी बेध्यानी से छुआ भर कि सारे पन्ने बिखरने लगें । पोर्च की दिवार से लगे झूले पर बैठी मैं उन पन्नों को समेटने की कोशिश मे लगी थी ।तभी हवा के हल्के झोंके के साथ कचनार की खुशबू महक उठी । मैंने सर उठा कर देखा सामने सड़क पर लगा कचनार अपने पूरे शबाब पर झूम रहा था । सफेद और हल्के जामुनी रंग के साथ मदमाती गंध का एक अजब सा तिलस्म फिर मुझे उन गलियों मे ले चलने की जिद लिए शरारती बच्चों सा आ खड़ा था सर पर ।

कब का भूल चुकी थी इस गंध को ।हां इन फूलों के गंध का बड़ा पुराना नाता था मुझसे , जिसे समय की गर्द ने बिसरा दिया था लेकिन आज वही महक मुझे अपने गिरफ्त मे ले रही थी । ये वही फूल थे जिन्होंने मेरे अल्हड़पने को मुहब्बत के संजिदा फलसफों मे यूं उलझा दिया कि मैं आह्ह।

इन कचनार के पेड़ों पर साल भर मे मात्र एक ही महीने की बहार आती है।शायद मेरी ही तरह , जिसकी जिंदगी मे भी कुछ पल बहारां बने थें ।और जिसकी खुशबू के फैलते ही पतझड़ आ खड़ा हुआ था फिर कोई नयी कोपल न आई मगर ओढ़ी हुई हरियाली ने पेड़ को ठूंठ की संज्ञा से भरसक बचाए रखा ।

बीते बिसराए कल को आज सामने खड़ा देखकर एक बारगी बेतहाशा धड़क उठा दिल । शब्द दर शब्द मुझे अतीत की गलियों मे खींचे लिये जा रहा था लेकिन जिम्मेदारियों से लदी फदी आज की हकीकत बार-बार जंजीर सी लिपट उठती पैरों से ।

दिलो दिमाग की जद्दोजहद बहुत बुरी होती है तोड़ जाती है अंदर तक।बेआवाज । बिखरे हुए किरचों से खुद को ही लहुलुहान होते देखना भी एक सजा से कम नही तब जबकि खता जर्रा भर न हो और एक आह् एक हूक तमाम उम्र ।

'संध्या जल्दी चल वरना तेरी वजह से आज मुझे मार जरूर पड़ेगी ।' 'चल रही हूं न , बस थोड़े से और फूल ले लूं, पता है शहरों मे ये इत्ता बड़ा पेड़ होता ही नही और इसे गमले मे लगा भी तो नही सकते । देख तो कित्ता सुंदर रंग और खुशबू भी गज्जब की । कान्हा ने फुर्सत मे बैठकर बनाया होगा इसे है न ?'

'ओय भाषण , जब देखो कचड़- बचड़ । तेरा मुँह नही दुखता । मेरी अम्माँ बोल रही थीं कि तेरे साथ न रहूं वरना मैं भी तेरी तरह ही कचड़ बचड़' और शाम की सुरमई फिजां मे दो अल्हर खनकदार हँसी घुलने लगी ।

संध्या यानि मैं , जो तब सत्रह साल की शहरी चुलबुली बातूनी और परले दरजे की शरारती लड़की हुआ करती थी । घर भर की लाडली और खानदान मे तीन पीढ़ियों बाद पैदा हुई इकलौती लड़की जिसकी परवरिश लड़को से कम न थी । मगर इंग्लिश स्कूल के बाअदब कठोर नियमो से त्रस्त , दमघोंटू शहरी परिवेश से बिदकी हुई जब भी मैं दादी के गांव जाती तो पूरी तरह हर पल जी लेना चाहती थी । बंदरों की तरह पेड़ो पर झूलना , फल तोड़ना , फूल चुनना और हर शाम गांव के तालाब के पास वाले मंदिर मे कान्हा को उन फूलों से बना हार समर्पित करना ।ये लगभग पंद्रह दिन चलता और आखिरी मे रोते बिसूरते शहर वापस आती तो हफ्तों बस उन पेड़ पौधों और फूलों के साथ मंदिर वाले कान्हा की याद मे ही गुम रहती । उस बार ठंढ़ मे लंबी छुट्टियां लगीं थीं और साथ ही बड़े ताऊ जी के घर शादी भी निकल आई थी ।

मैं खुशी से बौराई थी क्योंकि गाँव की शादी मे पहली बार शरीक होने का मौका मिला था । खूब जांच परख के लहंगे और मम्मी की बनारसी साड़ियां छांट ली थी । मेरे उत्साह का उफान अपने चरम पर था और मम्मी थीं कि मेरे उत्साह पर पानी फेरने मे लगी थीं 'हे! भगवान ! ये साड़ी ? इसका वजन तुम्हारे वजन से जरा सा ही कम होगा । ये संभाल पाओगी भला।क्यों नाश करने पर तुली हो महंगी साड़ियों को''।

' अरे जाने दो , शौक है तो पहना देना । पहली बार साड़ी पहनने के लिए खुद ही तैयार है तो मत डराओ फिर वहाँ बहुत सारे रिश्तेदार भी होंगें ।किसी को पसंद आ गयी तो

अच्छी ही बात है न दो तीन साल बाद हमे भी दौड़-भाग करनी ही है इसकी शादी के लिए ।" पापाजी ने मम्मी को टोकते हुए समझाया था ।

मात्र सत्रह की उम्र मे ही लड़की को पसंद कर लिये जाने की जो अजीब मानसिकता तब हुआ करती थी या जल्दी ब्याह देने कि उस पर आज हँसी आ रही है ।खैर ! सारी तैयारी के साथ हमारी सवारी निकल पड़ी थी गांव । लगभग एक हफ्ते भर न जाने कितनी सहेलियों और उनकी चचाजात बहनों , फूफियों के घर जा-जाकर और मिन्नतें कर-कर के ढ़ेरों हेयर स्टाइल , मेहंदी के डिजाइन सीखें थें वो मशक्कत अलग । मुकम्मल तैयारी के बाद मन मे लड्डू फूट रहे थें कि अबकि इस शादी मे तो बस मै ही दिखूंगी और कोई न होगा टक्कर देने वाला । काश। किसी से टकराए न होते ।

आठ दिन पहले ही हम गांव पहुंच गये थे । शादी कि तैयारियों मे हमारा योगदान बस बिछी हुई पुआल की चटाई पर बैठ कर पंगत मे खाने और शोर मचाने तक था । खाना परोसने वालों को परेशान करना भी क्या गजब का शगल हुआ करता था तब ।कभी दाल गरम नहीं तो , कभी घी ज्यादा चाहिए ,तो कभी पापड़ के लिए हंगामे और सबसे अधिक मजा आखिरी मे दही के वक्त आती । दही परोसने वाले की शामत हो आती जब सभी इकट्ठे उसे इधर आओ इधर आओ कह कर आवाज देते । किसी को दही के साथ शक्कर तो किसी को बूंदी तो कोई रसगुल्ले के लिए चिल्लपों मचाता । इन सभी चुहलबाजियों मे मैं सबसे आगे रहती क्योंकि सभी की लाडो थी और कोई कभी डांटता नही था मुझे । मेरी शह पर मेरे पीछे सभी हम उम्र वही शैतानियां करतें थें । बस एक बड़े ताऊजी का डर मुझे भी लगता था । अच्छे खासे छह फुट के ताऊजी की रोबीली मूंछें भी एकाध फिट लंबी जरूर रही होगी , हां और नही तो क्या , तभी तो वो दाढ़ी मे घुसपैठ करती सीने तक लहराती रहती जो एक रौबदार व्यक्तित्व के साथ ताऊजी को भीड़ मे भी अलग ही पहचान देती थी ।

हाँ तो रोज की तरह हमदोनों चली आ रहीं थीं फूल चुनकर । हम दोनों मतलब मैं और मेरी दूर दराज की चचेरी बहन आशू । मैंने आज पहली बार कचनार के फूल देखें थें । झक्क सफेद और हल्के जामुनी रंग के, मदमस्त खुशबू से सराबोर बड़े बड़े फूल ।जो अब तक मैंने कभी नही देखे थें । कान्हा को पीले नारंगी गेंदे के फूलों की माला पहना कर खुशी से मटकती चली आ रही थी घर की तरफ । बड़ी घेरदार फ्राक मे कचनार के फूल भर रखे थें जिसको टांगो तक उठाए एक थैले जैसी शक्ल मे समेट रखा था । देर हो जाने के कारण सामने के दरवाजे से न आकर हमने पिछले दरवाजे से घुसने की जुगत सोची ताकि आशू को डांट खाने से बचाया जा सके । पिछले दरवाजे तक जाने के लिए सकरी सी गली पड़ती थी जहां शादी का मंडप बांधने के लिए हरे कच्चे बांस रखें थें रास्ते मे । झुरपुट अंधेरे की वजह से मुझे दिखे नहीं या यूं कहा जाए कि किस्मत का अडंगा था जिसने अक्ल पर पट्टी बांध दी थी और मै जा टकराई उन बाँसों से ।इस से पहले की गिरती किसी की बाँहों ने थाम लिया था मुझे लेकिन हमेशा की तरह किसी भी परेशानी मे आँखे बंद कर के चीखने की मेरी आदत बिला नागा उस वक्त भी अपना पूरा परफोरमेंस देने लग गयी । आशू ने डपटते हुए मुझे झकझोरा। ' ओय , गिरे बगैर इतना चिल्ला रही है । चुप रह , अभी तमाशा खड़ा हो जाएगा मेरी दुश्मन ।' मेरी आँखें झट से खुल गयीं । आँखें खुलते ही जो पहली रसायनिक प्रतिक्रिया हुई थी मेरे अंदर ।वो आज भी सिहरा जाती है । दो मजबूत बाँहें मुझे सँभाले खड़ी थीं । गौर वर्ण का वो शख्स जिसके घुंघराले बालों की लट आधे माथे पर यूं छितराई थीं जैसे बदली से झांकता चांद ।बड़ी बड़ी आँखे जिसमे कुछ ऐसा था जिसने मेरी नजरों को बांध लिया था । ऐसा न था कि अब तक लड़के मुझे दिखे न थें, खासकर को-एजूकेशन मे तो सामान्य था लड़कों के साथ रहना मगर यहां तो कुछ बात ही अलग लगी ।ऐसा लगा मानो कान्हा ही तो न आ खड़े हुए हों ।अजीब सी मनोदशा थी ।एक खुमारी सी ।शायद यही स्थिति सामने वाले शख्स की भी थी । कुछ पल बीता होगा ऐसे कि तभी बड़े ताऊजी कि आवाज गूंजी

'क्या हुआ लाडो ? क्यों चीखी ?' लालटेन हाथ मे लिए आते दिखें ताऊजी । एक ही पल मे सारा नशा काफूर हो गया और मैं सीधी खड़ी थी अपने पैरों पर बिना किसी सहारे के । 'बाऊजी , बांस से टकरा गयी थी संध्या । अंधेरे के कारण दिखा नही ।'आशू ने धीमी आवाज मे जबाब दिया । 'हाँ भईया , वो तो मैं इधर ही आ रहा था तो झट से पकड़ लिया वरना बेतहाशा गिरती और सर वर फूटता ही था ।' उस शख्स की आवाज थी ये ।

ओह्ह् , अंधेरे के कारण नही दिखा होगा । यहां पर ये लालटेन टिका दे शेखर , कहीं किसी और को चोट

न लगे । अब ब्याह के घर मे तो ऐसे सामान पड़े ही रहेंगे । और लाडो ये क्या बटोर लाई है फ्राक में । ये गांव है बिटिया , ऐसे पैरों तक फ्राक उठा कर नही घूमते । और मुझे करंट लगा । मैंने झटके से फ्राक छोड़ दिया और सारे फूल उस शख्स के पांवों पर गिर पड़े । वे भी अचकचा सा गये और हड़बड़ा कर दो कदम पीछे हो लिए । ताऊजी लालटेन उन्हें पकड़ा कर खुद आगे आंगन की ओर बढ़ गये थे इसलिए अचानक हुई इन हरकतों को देख नही पाए मगर आशू ने ठुस्स से हँसते हुए कहा 'शेखर चाचू , लो ये फूल स्वीकारो जान बचाने के बदले । अभी वहां गेंदे का फूल मंदिर मे कान्हा को चढ़ा कर आई थी और ये कचनार के कुछ फूल आपके हिस्से का था ।

मेरी हालत तो सिर्फ मै समझ रही थी या शायद मैं बदहवास सी थी कुछ भी समझ नही आ रहा था बस एक अजीब सा एहसास हो रहा था जिसने धड़कनों की रफ्तार तेज कर दी थी । आँखें बार बार जा अटकती थीं उस चेहरे पर जहां अब एक शरारती मुस्कान खेलने लगी थी । क्या था उन नजरों मे कि बस पिघलती सी जा रही थी मैं । एक पल को लगा मानो हम दोनों ही खड़े थें वहां और हमारे बीच कचनार की खुशबू ।तभी आशू ने फिर से टोका 'चल भी अब ।तेरी जान तो बच गयी पर अब मेरी आफत है ।' ''चलो आशू तुम्हारी अम्मां से तुम्हें बचाएं । शेखर चाचू है न, तुम्हारी अम्मां कुछ न कहेंगीं ।''शेखर नामक उस शख्स ने आशू के सर पर चपत लगाते हुए कहा और आंगन की ओर बढ़ गये दोनों । मैं भी एक अनजानी डोर से खिंची उनदोनों के पीछे उनींदी सी चल पड़ी और साथ मे चल पड़ी थी कचनार की खुशबू ।

पैर हवा मे तैर रहे थे जैसे और मै ख्वाब मे चल रही थी । सामने ही आंगन मे अलाव जलाए सभी बड़े बूढ़े बैठे थें । एक तरफ चुल्हे पर खाना बन रहा था । आशू की अम्मां वहीं घर की अन्य औरतों के साथ बैठी रोटियां बना रही थीं । आशू पर नजर पड़ते हीं उन्होंने गुस्से मे बेलन दिखाया । बेलन देख कर आशू मुझे घूरती हुई कट्टी का इशारा करती अपनी कानी अंगुली दिखाई और पैर पटकती अंदर चली गयी । मैं अभी तय नही कर पाई थी कि आशू को मनाने अंदर जाऊं या यहीं रुकूं । शायद दिल ने पैरो को रोक दिया था । मैं वहीं रुकना चाहती थी जहां शेखर थें । अलाव के पास बैठी बुआ ने हाथ पकड़ कर वहीं बिठा लिया मुझे । उनके सवालों और सभी के साथ बोलती बतियाती हुई मैं वहां होकर भी वहां नही थी । मेरी आँखें लगातार शेखर पर टिकी थीं । उन्होंने वहीं आशू की अम्मां के पास रखे मोढ़े पर कब्जा कर लिया और सभी से घुलमिल कर खूब बतियाए जा रहे थें।

बातचीत के बीच न जाने कितनी ही बार हमारी नजरें टकराईं । रात के खाने के बाद तफ्सील से पता लगा कि शेखर आशू के चाचा हैं मगर बहुत दूर के रिश्ते मे बुआ दादी लगतीं हैं उनकी माँ । मुँहबोली बहन जैसी थी उनकी माँ हमारे घर के सभी चाचा ताऊ के लिए । एक गाज और गिरी तब जब हमारा परिचय करवाने के लिए ताऊजी ने हमें बुलवाया । शेखर जब चाचू घोषित किया जा रहे थें तो हमदोनों के ही चेहरे का रंग उड़ा सा था ।

जिस शख्स को देखकर ही मन मे प्रेमभावों का आवेग उठा हो उसे इस सम्मानित रिश्ते मे तब्दील करना बहुत मुश्किल था हमारे लिए । न जाने किस सोच मे डूबी उन आँखों मे जब मैंने झांका तो वहां भी यही उपापोह दिखा । खैर परिचय सम्मेलन खत्म होने के बाद सभी अपने बिस्तर की तरफ चल पड़ें । शेखर भी सुबह आने की बात कहते हुए अपने घर जाने को मुड़ गयें । उनके साथ ही आशू और उसके बहन भाई तथा अम्माँ भी जाने लगीं । मैं उन्हें छोड़ने के बहाने दरवाजे तक आई । जाते वक्त दो तीन बार शेखर ने पलट कर मुझे देखा था । एक बेचौनी सी दिखाई दी मुझे उनकी आँखों मे या खुद मै ही बेचैन थी उनकी अनुपस्थिति से जो मात्र रात भर की थी ।

हर सुबह कि तरह ही आम सामान्य ठंडी सी सुबह थी ये , मगर कहीं कुछ विशेष घट चुका था । हमेशा की तरह देर तक रजाई लपेटे पड़ी रहने वाली मैं बहुत जल्दी बिस्तर छोड़ चुकी थी । सलीके से बाल बांधने की गुहार लगाती कभी बुआ तो कभी ताई के पास कंधी रिबन लिए भटक रही थी ।कमर तक खुले लंबे बाल आज कुछ ज्यादा ही उलझे से थे । सुबह के समय सभी को हजार काम ।यहां से वहाँ टरकाई जाती देख मै भुनभुनाती सी जा कर पीछे के आंगन मे पीपल के चबूतरे पर जा बैठी । खुले बाल मानो चबूतरे पर फैले हवा के साथ झूल रहे थें । तभी बाल खिंचता सा लगा और मैं गुर्राती सी पलटी । देखा तो शेखर खड़े थें और उनके हाथों मे गन्ने के कुछ गंडेरियां थीं और मेरे बाल उनमे अटके थें । शायद ये हवा से हुआ हो या फिर जानबूझकर उनकी आँखों मे अजब सम्मोहन था । मेरी धड़कनों ने बेतहाशा दौड़ लगा दी थी ।

कनपट्टियों पर सनसनी सी होने लगी। बिना एक भी शब्द बोले हमारी आँखें खामोनी से एक दूसरे को अपने मनोभाव समझा रही थीं शायद ।एक अजीब बात ये थी कि बात बात पर झपकने वाली मेरी पलकें न जाने क्यों उन्हें देखते ही बिलकुल स्टैचु सी हो जातीं ।लगता जैसे डूबती जा रही हूं , होश बाकी नही रह जाता था फिर । जाने क्या नशा था । ''तुम्हारे बाल बहुत सुंदर हैं संध्या ।'' शेखर की आवाज ने जैसे उबार लिया था । ''कभी झाड़ू नही मिला तो तुम अपने बालों से लगा देना ।'' आशू ने आगे का वाक्य पूरा किया और जोर से ठहाका गूंजा जिसमे शेखर भी शामिल थें । सारा नशा काफूर हो गया और मैं तनमना सी गयी । ठहाके मे साथ देना हुंह ! मतलब क्या था शेखर का । मै मजाक दिखती हूं जो दोनो मिलकर खिंचाई कर रहें मेरी । मैं अपमानित सा महसूस करती डबडबाई आँखो को बचाती अंदर की तरफ दौड़ गयी । फिर तो दिन भर मैं अपने कोपभवन से बाहर न आई ।

सभी बारबार बुलाने आते रहे मगर मै टेसूए बहाती पड़ी रही । आशू बिचारी कभी बुआ की तो कभी ताई की डांट खाती फिर रही थी कि क्यों शेखर के साथ मिलकर मजाक उड़ाया । और उधर शेखर भी बेचैन से थें । जब मैं शाम तक बाहर न आई तो चाय लिए अंदर आए । मैं आहट सुनकर रजाई मे मुँह ढ़के पड़ी रही । मुझे लगा शायद आशू हो इसलिए नाटक और गंभीरता से कर रही थी । तभी माथे पर एक कोमल सी छुअन ने शरीर मे झुरझुरी जगा दी । मेरी आँखें खुलीं और खुद पर जरा सा झुके शेखर और उनकी हथेली को माथे पर देख एक बारगी सिटपिटा सी गई । पसीने से भींगने लगी अंदर ही अंदर ।आँखे फिर खो सी रही थी उन आँखों मे ।तभी शेखर बोल उठें ''सर तो ठंढ़ा है । बुखार नही है फिर क्यों नही निकलीं बाहर ?'' आवाज मे खीज के साथ एक बेचौनी सी थी ।

मैंने कुछ नही कहा और चुपचाप उठ कर बैठ गयी । वे वहीं पास मे रखे स्टूल पर बैठ गये थें । चाय मेरी ओर बढ़ाते हुए उनकी नजरें लगातार मुझे भेदती सी जा रही थी ।''अदरक वाली चाय है पी लो और झट से तैयार हो कर बाहर आ जाओ । हम सभी तालाब वाले मंदिर पर जा रहें । तुम आशू के साथ आ जाना । मैंने उसे बोल दिया है । और सुनो , आ ही जाना ।'' आखिरी शब्द पर जोर देते हुए उन्होंने आँखों मे झांका । मैं अपलक सी निहारती रह गयी और वे कमरे से बाहर जा चुके थें । उनके निकलते ही तीर की तरह आशू आ टपकी । '' सुन लिया न ! अब झट से थोबरा चमका ले और चल ।'' '' लेकिन अब्भी ? सभी डांटेंगे , और आज तुझे अम्मां का डर नहीं?''। अम्मां का ही काम है मेरी दुश्मन । आज उनकी तरफ से कान्हा को भेंट देनी है । अम्मां भी जातीं मगर वो अशुद्ध हो गयी इसलिए हमें भिजवा रहीं । शेखर चाचू के सुपुर्द इसलिए किया ताकि अंधेरे मे हम अकेले न आएं । ''मटक्को बिल्ली सी आँख नचाती'' आशू पर बड़ा प्यार आया मुझे , मै मारे खुशी की उससे लिपट गयी । अरे अब छोड़ ये नौटंकी और जल्दी तैयार हो जा । मैं भेंट की चीजे इकठ्ठी कर झोले मे रख लेती हूं ।

आशू बाहर निकल गयी और मैं एक बार फिर हवा के हिंडोले मे थी । संतरी पीले रंग के सूट मे शिफान की चुन्नी ओढ़े तैयार होकर जब आइने मे देखा तो खुद पर ही फिदा हो गयी । काजल की सुरमई कोर से आँखें और भी खूबसूरत दिख रहीं थीं । कानो मे बड़ी बड़ी बालियां झुलाती आंगन मे आई और बुआजी को जता कर आशू के साथ निकल पड़ी । आज एक अलग सा ही एहसास हो रहा था । गाल गुलबी हो रहे थें । खुद मे ही खोई सी देख आशू ने छेड़ा ''आज तो बहुते खबसूरत लग रही । कवनो खास बात है का ?'' ''अरी कुछ नही , बस आज तुझे दिनभर सब की डांट पड़ी न इसी बात से खुश हूं । और तू ये गंवई भाषा मे क्यों बोल रही ? जरूर कुछ शैतानी होगी मन मे तेरे ।'' ''और तेरे मन मे क्या है ? '' आशू कि नजरें मानो सोनोग्राफी कर रही हों मेरी ।

''कुछ भी तो नही और तू ऐसे क्यों घूर रही मुझे ।'' मेरी जबान अटक सी गयी और मै नजरे चुराने लगी उससे कि कहीं मेरी चोरी पकड़ न ले वो । ''वैसे सच कहूं तो शेखर चाचू के साथ तेरी जोड़ी खूब जमेगी ।मुझे तो लगता है कि बड़े ताऊजी को ये खबर दे देनी चाहिए ताकि छोटे ताऊजी (मेरे पापा) की चिंता खत्म हो तेरे ब्याह को लेकर । '' आशू गंभीरता से बोल रही थी ।

''पागल ! बकबकाए जा रही कुछ भी , ऐसा कुछ नही और सबसे बड़ी बात तेरे चाचू कुछ करते भी हैं या बस । मैंने उसे टटोला था या शायद खुद को आश्वस्त करना चाह रही थी । लो कर लो बात ! चाचू मैनेजर हैं इमारती लकड़ियों के फार्म हाउस मे । अच्छा कमाते हैं और इस साल उनकी शादी के लिए लड़की ढूंढ़ रहीं बुआ दादी ।वैसे

कह तो तेरी बात चलाऊं। उसकी बत्तीसी चमकी। ष्ज्यादा ठीठी ठीठी मत कर बिल्लो और मै तेरे लकड़ी बेचने वाले चाचू के पल्ले न बंधूंगीं हाँ मुझे तो बैंक वाले से शादी करनी है। मैं उसे चिढ़ाते हुए ये बोल रही थी मगर कहीं न कहीं दिल हुलस सा रहा था शेखर के साथ अपना नाम जुड़ता देख कर। आशू ने आँख तड़ेरी और कुछ कहतीं तभी मनुआ दादा (पुराने नौकर) ने हमे आवाज दी। हम जल्दी से मंदिर की तरफ लपके।

आज पहली बार मैं खाली हाथ आई थी कान्हा के द्वार पर।मन बेचैन सा हुआ कि कोई फूल लाई न माला। आज क्या अर्पित करुंगी कान्हा को। शाम और रात की संधिबेला के बीच डूबते सूरज की रश्मि किरणों की लालिमा फैली हुई थी मानो सूरज डूबने के बाद भी कुछ और देर रौशन रखना चाहता हो खुद का अस्तित्व। अभी धुंधलका छाया नही था इसलिए मैं जल्दी से पोखर के दूसरी तरफ लगे फूल के पौधों की तरफ दौड़ लगा दी। वहां ढ़ेर सारे लाल नारंगी पीले गेंदे लगे थें जिन्हें जल्दी जल्दी तोड़ कर अपने दुपट्टे मे भरती जा रही थी। तभी माली के चिल्लाने की आवाज आई और मैं बदहवास वापस भागने के लिए पलट ही रही थी कि पांव फिसल गया। गिरते ही मेरी चीख निकल गयी। वो तो गनीमत था कि पोखर मे नही गिरी। आवाज सुनकर सबसे पहले शेखर पहुंचे। वे कहीं आसपास ही रहे होंगे। आशू तथा और सभी के आने तक माली भी भन्नाता सा आ डटा हमारे ऊपर। इस से पहले की वो कुछ कहता आशू ने बड़े ताऊजी का नाम लेकर उसे चुप करा दिया। मुझे जस की तस बैठी देखकर उसने उठने का इशारा किया मगर मैं चाह कर भी उठ नही पा रही थी। पांव मुड़ गया था और हथेलियों के बल गिरने से कंधो मे झटका सा लगा था। मै असहाय सी उसे देखती हुई उठने मे असमर्थता जताई। आशू ने शेखर की ओर देखा और मुझे उठाने को कहा। उसके हाथ मे पूजा की थाल थी जो वो किसी और को दे नही सकती थी।

शेखर ने धीरे से सहारा देकर पहले मुझे खड़ा किया फिर अपनी बाँहो के सहारे मेरा कंधा पकड़ कर संभलते हुए चलने को कहा। एक तो गिरने से बदहवास थी मैं और कुछ कुछ शर्म भी आ रही थी कि इत्ती बड़ी घोड़ी जैसी लड़की यूं गिरी, फूल चोरी का इल्जाम भी सबके सामने कम बडु बात न थी।फिर यूं शेखर का इतने करीब आ कर मुझे बाँहों के सहारे लिए चलना।उफ्फ जाने कितनी रसायनिक प्रतिक्रियाएं एक साथ होने लगी मेरे अंदर और पत्ते की तरह कांपने लगा शरीर। अरे ऐसे कांप क्यों रही ? ठंढ़ लग रही है ? स्वेटर तक नही पहना है तुमने।पूरी बौड़म हो। कहते हुए शेखर ने अपनी जैकेट उतार कर मुझे पहना दिया। स्वेटर तो क्या आज ये अपना टोपा भी नही लगाई है चाचू। पता नही काहे की जल्दी मची थी इसे। आशू की बत्तीसी से अधिक उसकी आँखे चमक रही थी। मैंने गुस्से मे घूरा तो वो तेज कदमों से आगे बढ़ गयी। आशू का आगे बढ़ जाना उस वक्त समझ नही आया था मगर अब समझती हूं कि उसने तब हमें जानबूझकर अकेला छोड़ा था। मात्र सौ कदम के फासले हमने एक साथ तय किये थे और शायद मेरी ही तरह शेखर ने भी तब यही दुआ की होगी कि आजीवन हम यूं ही साथ चलते।शेखर के सनिध्य मे उसकी खुशबु और छुअन मुझे सिहरा रहे थें। पांव की मोच और कंधों की तकलीफ भूल गयी कुछ देर के लिए। बस उस स्पर्श की खुशबु मे महक रहा था मेरा अंतर्मन।

मंदिर पहुंच कर मुझे दीवार के सहारे खड़ी कर गये थें शेखर। पंडित जी को भेंट का सामान दे कर आशू हमारी ही राह देख रही थी। कान्हा के सामने खड़ी मैं आँखें बंद किये अपने साथ खड़े शख्स को अपनी जिंदगी का सहारा बनाने कि विनती कर रही थी। आज गेंदे का फूल माले की शक्ल मे नही था जिसे कान्हा को चढ़ाते हुए कुछ अपूर्णता सा महसूस हो रहा था मुझे। एक एक फूल अलग अलग बिखरा सा।बगैर धागे के कैसे बांधा जा सकता है कुछ भी ,भले धागा कच्ची सूत का ही हो।आज अधूरा श्रृंगार जाने क्यों आशंकित कर रहा था मन को।

खैर अंधेरा घिर आया था और अब हम लौट रहे थें घर की तरफ। आशू का हाथ पकड़े हुए शेखर के पीछे चल रही थी मगर उनकी खुशबू जैकेट के साथ ही मुझसे लिपटी चल रही थी। घर आकर आशू ने मेरे लंगड़ा के चलने के पीछे की वीरगाथा सभी को सुना दी। फिर तो रिश्ते की चाचियों और बुआओं ने मुझे फिरंगन की उपाधी दे कर खूब हँसी उड़ाई। मैं वहीं अलाव के पास बैठी सबको खुद पर हँसता देख मुस्कुरा रही थी। आज मेरे चेहरे पर जरा सी भी मलीनता नही थी वरना अब तक तो कब की भुनभुनाती हुई जा बैठती कोपभवन मे।

शायद ये असर था उस खुमारी का , उस छुअन

का जिसे प्यार कहते हैं जिसने रोम रोम को झंकृत कर दिया था। शेखर की जैकेट अब भी मुझसे लिपटी थी और मैं उसमे उनकी बाँहों को महसूस कर रही थी। बुआजी गर्म तेल से मेरे पैर की मालिश कर रहीं थीं और सामने ही शेखर बैठे शरारती नजरों से जब तब मुझे देख रहे थें सभी की नजर बचा कर। मगर हम पर किसी की नजर पर चुकी थी। शादी वाले दिन पीछे के आंगन मे एक कोने मे पड़े स्टोर रुम मे मेरा टैम्परेरी ब्यूटीपार्लर बन गया था। शाम तक ब्यूटीपार्लर मे लंबी लाईन लगी रही। लगभग सभी का हेयर स्टाइल और मेकअप।थक गयी थी पूरी तरह। कारण।ये गांव की चाचियां और बुआएं कम न थीं। किसी को शकरपाले सी बुनी हुई चोटी जम नही रही थी तो कोई जूड़े मे कम्फर्ट नही थीं।किसी को पाउडर अधिक पोतना था तो कोई लिपस्टिक लगाए जाने पर ही शर्म से लाल हो रहीं थी। साड़ी बांधने मे सौ बार उठ्ठक बैठक हो गयी होगी सो अलग। सभी का मेकअप हो गया था मगर अब तक थकान से मेरी रंगत उड़ गयी थी। मैं वहीं कमरे मे सभी सामानो के ढ़ेर के बीच औंधी लेट गयी। जाने कब आँख लग गयी। ये स्टोर रुम था जहां मैंने अपना पार्लर जमाया था और इधर कम ही आवाजाही थी। अंधेरा हो गया था मगर किसी ने लाइट भी नही जलाई थी इधर की। मैं बेसुध सोई पड़ी थी। तभी शेखर की आवाज से हड़बड़ा कर उठ गयी।

यहां क्या कर रही हो तुम ? और अब तक तैयार भी नही हुईं ? वे मेरी कलाई पकड़े हिला रहे थें मुझे। वो सभी को तैयार करती हुई थक गयी थी। जरा सा लेटी तो नींद आ गई। मैं झेंपती सी बोली। मैं चाय लाकर देता हूं। पी लो और तैयार हो जाओ। नौ बजे तक बारात आ जाएगी। वे जा चुके थें। आशू भी मुझे ढूंढ़ती वहां आ गयी थी। उसने बढ़िया सा लहंगा सिलाया था। सबकी कंघी चोटी हो गयी न ? अब मुझे भी तैयार कर दे। और तू ऐसी ही बनी रह भूतनी जैसी। कहती हुई उसने आइना सामने रखा तो हम दोनों ही खिलखिला दिये।क्योंकि काजल बह कर आँखों के बाहर तक आ रहा था वहीं सभी को लगाई लाली पाउडर चेहरे पर फैला था मेरे। मैंने उसके दुपट्टे मे मुँह पोछना चाहा तो वो छिटक कर भाग गयी। मैं वहीं बैठी रही तभी शेखर चाय लेकर आ गयें। चाय सामने टेबल पर रखा और जाने को मुड़े ही थें कि लाइट कट गयी। मैं वहीं बिलकुल पास ही खड़ी थी। अंधेरा ऐसा कि कुछ सूझ नही रहा था। अभी कुछ समझती कि उसके पहले कुछ पांवों के उपर से निकला शायद चूहा।मैं घबरा कर चीखी और लिपट गयी शेखर से। शेखर ने सबसे पहले मेरे मुँह पर हाथ रखा और फुसफुसाए ''पिटवाओगी क्या'' ? एक तो लाइट नहीं है दूसरे मुझसे चिपकी हुई हो खुद और चीख भी रही हो।
ये सुनकर मै हड़बड़ा कर उनसे अलग होने को हुई मगर उन्होंने मुझे बांहो की कैद से मुक्त न होने दिया। कानों के पास हल्कि सी सरगोशी हुई ''संध्या, तुम मुझे बहुत पसंद हो। शायद यही पहली नजर का प्यार होता है। यदि तुम हाँ कहो तो मैं माँ से बात करुं। यदि ना हो तो फिर कोई बात नही।मगर मेरा दिल कहता है तुम हाँ कहोगी।''

मैं कुछ भी कहने की स्थिति मे न थी। बेकाबू धड़कनों के शोर ने पूरे शरीर को कंपकंपा सा दिया था। मैं बगैर कुछ कहे बस उन पलों को खुद मे जज्ब कर लेना चाहती थी। एक ऐसा पाक एहसास जो रुह की गहराइयों मे उतरता जा रहा था। इस छुअन मे कहीं कोई ऐसा एहसास न था जो शरीर को परिभाषित करता लगा हो। ये तो दो रुहानी और मुकद्दस प्रेम का प्रवाह था जो निर्बाध बहा जा रहा था। मैं जाने कैसे वशिभूत सी और सिमट गयी उनकी बाँहों मे।सीने पर सर रख कर उनकी धड़कनो को सुन रही थी। बमुश्किल दस मिनट गुजरे होंगे। शेखर ने समझ लिया था मेरे दिल कि बात को।बगैर एक भी शब्द बोले। धीरे से मुझे अपनी बाँहो से अलग कर मेरा सर सहला कर आगे बढ़ गये अंधेरे मे ही।उनके जाते ही लाइट आ गयी थी। मेरा पूरा शरीर जैसे लरज रहा था। बुत की तरह वहीं बैठी मै बिलकुल ही शिथिल सी हो गयी थी। सुन्न पड़ गया था शरीर और दिमाग। कुछ पल के बाद आशू चाय लिए आती दिखी। ''ले चाय पी ले। चाचू ने भिजवाया है, और फट से तैयार हो जा। सब तुझे ही ढूंढ़ रहे हैं। और सुन आज वो बुअ ादादी भी आईं हैं। बैठी हैं आंगन मे सभी से मिल रहीं। अभी छोटे ताऊजी से तेरे लिए पूछ रहीं थीं। जरा अच्छे से तैयार होना। आशू की पटड़ पटड़ कानों मे पड़ रहे थें मगर समझ नही आ रहा था कुछ भी क्योंकि दिलोदिमाग दोनो ही अपनी जगह पर नही थें।

कुछ देर तक खुद को संभालती हुई चाय पीती रही फिर तैयार होने लग गयी। आशू को पहले तैयार कर के बाहर भेज दिया था। छोटी चाची ने साड़ी पहना दी थी

मुझे । हरे रंग की सिल्क बनारसी साड़ी मे मैं बहुत सुंदर लग रही थी । तभी तो चाची ने जाते हुई ढ़ीट का टिका लगा दिया था कानों के पीछे ।बालों को क्लिप के सहारे खुला छोड़ दिया क्योंकि सभी की चोटी बाँध बाँध कर पखुड़े दुखने लगे थें । नब्बे के दशक मे तब आधुनिकता की महामारी अधिक नही फैली थी इसलिए बारात मे महिलाएं नही आया करतीं थीं । तब बालों मे वेणी या फूल लगाना भी बहुत बुरा माना जाता था । घर की महिलाओं और कुंवारी लड़कियों को भी बहुत अलग रखा जाता था बारातियों से । मैं हल्की लाली और काजल की लकीरों मे खुद को समेटती , साड़ी संभालती हुई जब आंगन मे आई तो एकबारगी सभी मुझे ही देखने लग गयें । कुर्सी पर बैठी उम्रदराज महिला जिनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था, ये तो नही कह सकते मगर ठसका जरूर अलग ही दिख रहा था । पापाजी ने आवाज देकर बुलाया और पांव छूने को कहा । पांव छूते ही ढ़ेरों आशीष के साथ उन्होंने अपने पास ही बिठा लिया । मेरा हाथ पकड़े बहुत देर तक बात करती रहीं । घर परिवार पढ़ाई आदि।सामान्य सी बातचीत मगर मै सहज महसूस नही कर पा रही थी क्योंकि उनके सवालों से अधिक उनकी मुआयना करती नजरें मुझे परेशान कर रहीं थीं । तभी बारात आने की खबर से हलचल हुई मैं आशू का हाथ पकड़ वहां से खिसक ली ।

'' कौन हैं ये ? तेरी वही दादीबुआ तो नही ? बाप रे कित्ते सवाल करतीं हैं और उस पर घूरतीं भी कितना हैं । मेरी तो सांस ही अटकी हुई थी।'' मैंने नाकभौं सिकोड़ते हुए आशू से कहा तो वो गंभीरता से बोली ''अच्छा है न ! एक का मुँह बंद नही रहता दूसरी की आँखें । तुम कचड़पचड़ बोलना वो तुम्हें घूरती रहेंगी । अच्छी जोड़ी रहेगी सास बहु की,दोनों एक पर एक इक्कीस ।'' इस अजीब सी तुलना पर हमदोनों ही हँस पड़े ।

शेखर बारात की खातिरदारी के लिए सभी के साथ शामियाना मे व्यस्त थें । मैं बार बार बेचैन नजरों से उन्हें ही ढूंढ़ रही थी । आशू समझ चुकी थी कि आग दोनो तरफ बराबर लगी है । उसने किसी के हाथों खबर भिजवाई थी शेखर के पास । कुछ ही देर मे शेखर सामने खड़े थें । बाराती के कुछ लोगों को यहां मंडप तक लाने के बहाने वे आए थें । सभी के बैठने की व्यवस्था करते हुए उनकी नजरें मुझ पर ही टिकी थीं जिसमे तारीफ और दिवानगी के मिलेजुले भाव स्पष्ट दिख रहे थें । मैं आशू के साथ वहीं मंडप के एक सिरे पर घरातियों के साथ बैठी थी । बार बार चेहरा गुलनार हुआ जा रहा था । आँखें शरम से झुकी जाती और गालों पर अनार दहक उठे । तभी बड़ी ताई ने आशू को स्टोर से कुछ लाने को कहा । उसने मुझे भी साथ मे खींच लिया । स्टोर मे हम सामान निकाल रहे थें तभी शेखर की आवाज आई'' थैंक्यू आशू ।''मैं जम सी गयी थी । सामने शेखर अपनी शरारती मुस्कान के साथ हाथों मे एक गुलाब लिए खड़े थें । ''चाचू जल्दी अपनी कथा निपटा लेना । मैं अभी आ रही ।'' आशू मुस्कुराती हुई बगल से निकल गयी और मैं जड़वत खड़ी थी । ''बहुत खूबसूरत लग रही हो संध्या । आज सोचा था कि माँ से कह दूंगा कि तुम से मिल कर तय कर लें कि बहु पसंद है या नही । मगर आपाधापी मे समय ही नही मिला ।'' शेखर बहुत करीब थें मेरे शायद बालों मे गुलाब लगा रहे थें । उनकी सांसे मुझ से टकरा रहीं थीं और मैं एक अजीब से नशे की गिरफ्त मे थी । होशो हवास ने साथ छोड़ दिया और जब शेखर ने मेरी ठुड्डी पकड़ कर चेहरा उठाया तो काजल की कोर मे बंधी आँखें अपनी हदों को तोड़ कर उन गहरी झील सी आँखों मे डूबने सी लगीं।जाने कैसा रुमानी एहसास था कि शरीर मे मानो जलतरंग सी बजने लगी ।लगता था समय रुक जाए बस यहीं जिंदगी मे और क्या चाहिए इसके अलावे। इस से इतर और भी कोई जिंदगी हुआ करती है भला ।

आह्ह।मगर जिंदगी तो जिंदगी होती है । ये छोटे पल छिन महज भुलावे की तरह आते हैं और बहलाते बरगलाते चल देते हैं रुह पर तमाम खराशों को छोड़ कर । बुआदादी की पारखी आँखों ने अपने बेटे की बहकती नजरों को भांप लिया था । शादी की रात तमाम समय हम एक दूसरे की आँखों मे झांकते हुए गुजार रहे थें तभी एक हंगामे ने सारा बना बनाया बिगाड़ दिया ।शायद किस्मत यही थी जिसे लिखने वाले ने लिख तो दिया बगैर उस दर्द की कल्पना किये जिसने दिल के जख्मों के साथ ताउम्र जिये जाने की सजा को सांसों के साथ मुकर्रर कर दिया था।

बारात मे बड़े ताऊजी के परम मित्र भी आए थें । उनकी नजर बहुत देर से मुझ पर टिकी थी । न जाने कब उन्होंने पापाजी और ताऊजी से बात की और मेरा रोका तय कर लिया । जब उन्होंने जाते वक्त मुझे रुपये पकड़ाए तब भी मैं बेवकूफ कुछ समझी नही बल्कि उन पैसों से क्या क्या खरीदूंगी यही बजट बनाती रही और नसीब का गणित जाने किस ज्यामिती मे उलझने को बेखबर बढ़ रहा था। शेखर ने वादा लिया था मुझसे कि

चिट्ठी लिखूंगी । लैंडलाइन का नंबर भी दिया था । एक खूबसूरत भविष्य के ताने बाने बुनते हम जब विदा ले रहें थें तब क्या जानते थें कि आखिरी मुलाकात है ये हमारी । वापस आ कर उन तमाम मीठी यादों मे खोई मैं सीने में तकिये को भींचे हर दिन शेखर के प्यार मे और भी दिवानी हुई जा रही थी । बारहवीं की परिक्षा के अच्छे परिणाम के बाद आगे कालेज की पढ़ाई के साथ ही शादी की बात जोर पकड़ने लगी । मैं हर चिट्ठी मे शेखर से कहती कि जल्दी अपने परिवार वालों से बात करे । उनका जबाब भी माकूल ही रहता । अप्रैल का महिना था गर्मियों ने दस्तक दी ही थी । एक रोज कालेज से लौटकर आई तो घर मे खुब गहमागहमी थी । बड़े ताऊजी ,आशू के पापा और भी एक दो लोग परिवार के आए थें गांव से । मैंने बहुत खुशी खुशी सभी के पांव छुए सभी के चेहरे तने से थें । पापाजी वहीं चिंतित से बैठे थें । माजरा समझ से परे था । तभी मम्मी ने आवाज दे कर अंदर बुलाया और धीमी आवाज मे डांटना शुरु कर दी । उनका गुस्सा देख कर मै घबरा गयी मगर तब मेरे पांव तले जमीन खिसक गयी जब उन्होंने बताया कि शेखर वाली बात से ये सभी नाराज हैं और इसलिए ही यहां आए हैं ताकि मुझे समझाया जा सके कि ये रिश्ता किसी हाल मे नही हो सकता । बुआदादी ने विशेष तौर पर खूब ताने दिये थें बड़े ताऊजी को और खूब लानतमलानत की थी उनकी । आशू को डांट पीट कर सारी बात निकलवा ली थी उसकी अम्मां ने और उन्होंने ही पहले बुआदादी को फिर परिवार मे सभी को ये सनसनीखेज जानकारी बांटने का काम किया था ।

मै बिलकुल चुप खड़ी थी सभी के सामने सर झुकाए । सभी ने बारी बारी से मुझे ये समझा दिया था कि चाहे मुँहबोली ही सही मगर बुआदादी बहन है उनकी । शेखर के साथ रिश्ता किसी हालत मे न उन्हें स्वीकार है न गांव को । इसलिए भविष्य मे फिर कभी शेखर से कोई वास्ता न रखूं । ये परिवार के मान सम्मान की बात है और यदि इसमे कोताही हुई तो वे भूल जाएंगे कि मै तीन पीढ़ियों मे एकलौती लड़की हूं ।

पूरे शरीर मे झुरझुरी उठ गयी थी उनकी समझाइस कम धमकी सुनकर । बस खामोशी से सर हिलाकर रह गयी । उनके जाने के बाद भी हफ्तों मम्मी का भाषण और कोसना चलता रहा । डाकिया को हिदायत थी कि कोई भी चिट्ठी मेरे हाथ मे न दी जाए । बहुत कोशशों के बाद एक दिन शेखर को फोन कर पाई थी । उनकी बेचैन आवाज सुनकर मैं फूट फूट कर रो दी थी । उन्होंने बहुत समझाया और कहा भी कि हम भाग चलते हैं । एक दिन सब स्वीकार कर लेंगे हमें मगर मैं अपनी जान से अधिक उनकी सलामती के लिए चिंतित थी कि कहीं उनको न कुछ करवा दें ये लोग। आखिरी बार बात हुई थी उस रोज हमारी उन्होंने रुंघे गले से कहा था''संध्या , क्या तुम मुझे भुला दोगी ? क्या मैं जी पाऊंगा तुम्हारे बिना ।तुम पहला प्यार हो मेरा और आखिरी भी ।भले हम एक न हो सकेंगे मगर तुम्हारी जगह मैं किसी को नही दे पाऊंगा ।ये तकलीफ तमाम उम्र रिसने वाला नासूर बन जाएगा ।हमदोनों ही जी नही पाएंगे ।'' मेरी हिचकियों के बीच ही फोन कट गया । मैं इस सदमे से टूट गयी थी । बीमार हो कर बिस्तर पकड़ ली । पढ़ाई चौपट हो गयी । नवंबर मे अचानक एक दिन फिर बड़े ताऊजी किसी के साथ पधारें । बहुत देर तक सभी की बातचीत चलती रही फिर मुझे चाय लेकर बुलाया गया । न चाहते हुए भी मुझे उस रोज शगुन के रुपये पकड़ने पड़े । साथ ही निलेश की तस्वीर भी पकड़ा दी गयी । मैंने तस्वीर को नजर उठा कर भी नही देखा । लगभग पंद्रह दिनों मे ही सगाई की तारीख निकाल ली गयी ।

मैं यंत्रवत सभी रस्में अदा करती रही । निलेश ने जब अंगूठी पहनाई और मेरे हाथ खींचने के बावजूद हाथ नही छोड़ा तब मैंने नजर उठा कर देखा था उन्हें । मासूम से चेहरे पर गंभीर आँखें जहां शरारत या प्यार नही बल्कि हक के भाव अधिक थें शायद ।धीरे धीरे सिलसिला शुरू हुआ निलेश के फोन का ।मैं खिंची खिंची सी बात करती बस एक औपचारिकता निभाती थी । एक रोज उन्होंने पूछ लिया ''मै पसंद नही तुम्हें शायद ।देखो यदि ऐसा है तो बता दो अभी भी समय है । मैं तुम्हें तुम्हारी समस्त स्वीकृति से पाना चाहूंगा । दिल और दिमाग के बीच सिर्फ शरीर नही चाहिए मुझे । पत्नी के साथ एक मित्र एक प्रेमिका का भी इंतजार है मुझे । अब यदि तुम इस सभी रुपों मे खुद की स्वीकृति दो तभी मै फोन करुंगा अन्यथा मुझे पापाजी से बात करनी होगी । दबाव मे रिश्ते निभाऐ नही ढ़ोये जाये हैं संध्या ।''

मैंने उस रोज बहुत सोचा । लगभग सही ही कहा था निलेश ने । जिस राह जाना नही उसकी बाट जोहने का कोई मतलब न था । फिर निलेश की क्या गलती थी जो

उन्हें तकलीफ दिया जाए। ये सब तो तकदीर के तमाशे थें ।नियति के आगे सर झुकाना ही था । अगले दो महीने बाद ही मैं निलेश की ब्याहता थी । शादी के हवनकुंड मे अक्षत फेंकती अपनी पुरानी यादों को भी होम कर दी थी ।विदाई के समय अपनी अंजुरी मे भर भर कर चावल फेंकने के साथ ही खुद को भी पूरी तरह उसी देहरी पर उलीच आई थी ताकि आगे के सफर मे सिर्फ निलेश के हिस्से की संध्या हो । आज लगभग बीस सालों बाद फिर वही आवाज ,वही कसक "कैसी हो संध्या ?" "कौन ? मैंने पहचाना नही । "मैं शेखर ! बहुत सालों बाद गांव आया था ।बहुत मिन्नतों के बाद आशू से तुम्हारा नंबर मिला । तुम खुश तो हो न ? और बच्चे।" न जाने कितनी बातें कितने सवाल और मैं एक बार फिर चेतनाविहीन महसूस कर रही थी खुद को ।हजारों सवाल थे मेरे पास भी मगर अब इन सबका औचित्य ।"मैं अच्छी हूं और बहुत खुश भी । निलेश अच्छे इंसान हैं । सब कुशल है । एक बात कहूं यदि गलत न समझें तो "मैं खुद को समेट चुकी थी अब तक । " हाँ बोलो न ! पूछने की जरूरत तुम्हें कब थी? यदि हम अजनबी ही बने रहें तो हमारे परिवार ,बच्चों के लिए अच्छा होगा।शायद मैं आपसे पहचान का आधार या रिश्ते का समीकरण निलेश को समझा नही पाऊंगी ।आप समझ रहे हैं न ।कहती हुई मैं हकला रही थी । हमेशा खुश रहो संध्या । मै समझ सकता हूं । बस एक बार तुम्हारी आवाज सुनने की बेचौनी मे मै भूल गया था कि हलात ने आज हमें जहां ला खड़ा किया है वहां रिश्ते तो क्या पहचान की भी कोई पगडंडी नही हो सकती हमारे बीच। अलविदा। फोन कट चुका था और मैं उन नंबरों पर अंगुलियां फेरती उनके शब्दों मे खुद को तलाशती इस रिश्ते के आगाज और अंजाम के बिखरे पन्नों को समेट रही थी ।बाहर हवा के तेज झोंके से कचनार के फूल यहां पोर्च तक आ बिखरें थें । वही सफेद जामुनी रंगत मगर खुशबु का तिलिस्म टूट चुका था ।

अपराजिता अनामिका
बैतूल मध्यप्रदेश

कुछ चैन मिलता

एक आग सी लगी है मन मे अब भी
तेरी उन बातों से।
नाता है आज भी मेरा कुछ उन साथ मे
बीती रातों से।।

मैं ठहरा हूँ चलता है समय जैसे दो दिन
की बात कोई।
एक डोर कोई है बंधी हुई तेरी गर्म उन
सासों से।।

आँखे हैं भरी पर रोता नही मैं टूट के
जुड़ा दिखाता हूँ।
दिल भारी पर है आज भी तो तेरे ही
उन अहसासों सें।।

मैं रहा समर्पित तेरे लिए दिल को मेरे
कुछ चौन मिला।
पर तू बैरी दुनिया जुल्मी खेले सब मिल
जज्बातों से।।

माही न समझ कोई बात नही एक यारी
तो पर रहने दे।
दामन थोड़ा बचता तो रहे इन चुभने
वाले काँटों सें।।

इंदुरानी,अमरोहा

स अध्यापक,जूनियर हाईस्कूल, सलारपुर
खालसा,जोया,अमरोहा,244222

मातमपुरसी

आज मीना सुबह से ही रो रही थी । क्योंकि उसकी मां का की असामयिक मृत्यु हो गई थी पूरे घर में लोगों का आना-जाना लगा हुआ था । खाने में कब क्या बनाना, कैसे बनेगा? इसी विषय पर घर की महिलाओं में बहस छिड़ी हुई थी । चार बच्चों का करूण रुदन किसी को नहीं दिख रहा था। रिश्ते की मुँहबोली ताई भी आ गईं । बोली खाने में बघार नहीं लगेगा । पर स्वाद कहां से आएगा? थोड़ा सा अचार मंगा लो मां सुहागन गई थीं, सो बिछूडी ,चूडियाँ पहले कौन लेगा हिसाब -किताब में लगी हुई थीं।

वो चली गई, बहुत अच्छी थी । कभी पहले तो ना कहा था । बस हमेशा आलोचना ही की थी । बड़ी मौसी तो अपने बेटे की शादी की तैयारियों की बातों में ही मगन रहती थी। सच है, जिसका इंसान जाता है, उसे ही कमी खलती है, बाकी तो बस अफसोस के अफसाने ही होते है । अच्छे लोगों की ऊपर भी जरूरत होती है तभी किसी ने कहा । पहले दिन, दूसरा दिन खाना मामा के घर से बनकर आता है । बड़ी ताई कहने लगी । कहने को तो चार घर की दूरी पर रहती थीं पर मजाल है कि एक दिन भी खाने को पूछा हो । बुराई -भलाई करने को मायके वाले, काम धाम करने को भी मायके वाले याद आ रहे थे।

मीना सब कुछ समझ कर भी कुछ बोल नहीं पा रही थी । कुछ कहती तो बड़ी ताई कहतीं -छोरी की जबान बहुत चलती है देवरजी ससुराल में क्या करेगी? छोटी बुआ भी आ गई कहने लगी -भाई की उम्र ही अभी क्या है । मुश्किल से पचास का होगा । दूसरी शादी कर दो घर कौन संभालेगा? मां को मरे चार दिन भी न हुए, लोग क्या-क्या बातें कर रहे है? मीना का बाल -मन समझ न पाया । पर छोटी उम्र में ही बड़ी समझ आ गई थी, कि ये लोगों की मातमपुरसी नहीं ,दिल दुखाने का जरिया बन गया था। बड़े लोगों के छोटे दिल एक- एक कर निकल कर बाहर आ रहे थे । वक्त बहुत बड़ा सबक सिखाने चला आ रहा था । उसने छोटे भाई -बहन तथा अपने पिता की देखभाल करने के लिए कमर कस ली थी ।

आराधना विसावाडिया इंदौर

एकांत

कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता कहीं जमीन तो कहीं आसमां नहीं मिलता यह कहना बिल्कुल सही है हम जितना चाहते हैं उतना नहीं मिलता कुछ ना कुछ कमी जरूर रहती है या ऐसा कह लो ,कि इंसान के फितरत हे भगवान ने ऐसी बनाई है कि उसकी जरूरत का अंत ही नहीं होता इंसान का मन भागते रहता है एक जरूरत पूरी हुई नहीं की दूसरे की कल्पना करने लगता है भगवान ने इंसान को मन ही क्यों दिया अगर मन ना दिया होता तो उसमें चाहत ना होती खैर ऊपर वाले की रचना पर संदेह भी नहीं किया जा सकता भगवान ने तो अपनी तरफ से अच्छे इंसान बनाएं पर इंसान धरती पर आकर लालची स्वार्थी बन गया है तो भगवान भी क्या करें इंसान चाहता क्या है और उसे क्या मिल जाता है या कह लो बहुत कुछ मिल जाने पर भी एक अकेलापन जरूर खलता है मन को कि कोई ऐसा साथी हो जो बिना कुछ कहे ही हमारे मन के भाव को समझ ले और हर उलझन परेशानियां से कहीं दूर सुकून भरी जिंदगी में ले जाए जिंदगी की ज्यादा खामोशियां भी बहुत चुभती है सब कुछ है दौलत बिछी है सुख सुविधाएं हैं फिर भी अगर मन अकेला है तो यह सब किस काम का घर खूब बढ़ा पर अगर वहां सिर्फ तनहाई रहती हो तो किस काम का जिंदगी में एक नं एक दोस्त होना चाहिए जो हमें हंसाए और बिना कुछ बोले ही हमारे मन की बात समझ जाए क्योंकि अकेलापन बहुत खलता है जीवन मे ।

कंचन जायसवाल

अपना अपना भाग्य

'क्या से क्या हो गया,बेवफा तेरे प्यार में' 'चाहा क्या क्या मिला,बेवफा तेरे प्यार में'

सच है न देव कितनी मोहब्बत थी न हमदोनों के बीच में ।एक 'दीया' तो दूजा 'बाती',लेकिन ये जान ही न सके कि 'दीए' के संग जलते-जलते 'बाती' को एक दिन जल जाना होता है । 'दीया' अधूरा सा ही सही मगर रह जाता है । आने वाले समय में शायद किसी का साथ पाकर रोशन भी हो जाता है, किंतु 'बाती' 'बाती' का कहीं निशां भी नहीं रहता ।

यही कहानी तो अपनी है ना देव! तुमने 'दीए' सा ही साथ रहकर हर पल मुझे जलाया और मैं जब पूर्ण रूप से जलकर तुम में खो गई तो झटके से मेरी राख को हवा में उड़ा दिया। अब यहां ना मैं हूं, ना मेरी राख और ना ही धुआँ अगर कुछ बांकी है तो वह है बस अंधेरा जिसकी कालिमा में मिलकर मेरे स्वयं का अस्तित्व भी खो चुका है, लेकिन तुम हो तुम अभी भी हो इसी अंधेरे में कहीं छिपे से इस बात की उम्मीद में कि कोई अन्य 'बाती' आएगी और तुम्हारे इस खाली 'दीए' को अपना घर बना कर एक बार फिर तुम्हारी जिंदगी में रोशनी भर देगी । ठीक है मैं खुश हूं लेकिन लेकिन मैं सोचती हूं देव! कि आखिर 'बाती' को तुम्हारा साथ देकर क्या मिला? सारी जिंदगी तुमपर लुटा देने के बाद भी तो, उसे हवा के थपेड़े,बारिश के बूंदों की थाप और तुम्हारा गर्म जलता हुआ साथ ऊपर से अंतर्मन की जलती हुई ज्योति ।क्या यही सब एक 'बाती' की थाती है,जिसे समेटने के लिए 'बाती' अपनी सारी जमा-पूंजी व जिंदगी तक को दांव पर लगा देती है।

सुनती आई थी कि जो जितना मिट्टी से जुड़ा रहता है उतना ही विश्वासी होत है लेकिन तुम इतने निष्ठुर क्यों हो? मिट्टी के बनकर भी स्वयं में बेवफाई समेटे हो। खैर कोई नहीं तुम जियो हजारों साल से चली आ रही परंपरा को निभाते हुए तुम जियो। तुम मनाओ मेरी मौत पर खुशियां,जलाओ घी के 'दीये'.लेकिन याद रखना देव! हमारे बिना तुम्हारा कोई भी अस्तित्व नहीं है फिर चाहे तुम्हारे साथ मैं जलूं या फिर मेरी ही कोई दूसरी बहन 'बाती'

स्वराक्षी स्वरा' खगड़िया

नीलम की गज़ल

गुल कहूँ गुलशन कहूँ या
रौनके महफिल कहूँ।
हर जवाँ सीने में तुझको
इक धड़कता दिल कहूँ।।

वो तेरा बेवाक हँसना
याद है अब भी मुझे।
क्या मैं उस मासूमियत को
प्यार के काबिल कहूँ ।।

आह भरते रात भर
देखा सितारों को सदा।
क्या मैं उनको भी मरीजे
इश्क में शामिल कहूँ।।

तय किया जिस जुस्तजू में
उम्र का वीराँ सफर।
क्या तुझे मैं आज वो
खोई हुई मंजिल कहूँ।।

है फकत तेरी खता ना
कुछ है मेरा भी कसूर।
कैसे तुझको राहे उल्फत में
भला गाफिल कहूँ।।

हो गई बिस्मिल मैं अपने दिल
की ही शमशीर से।
क्या करूँ तुझसे शिकायत ,क्यूँ
तुझे कातिल कहूँ।।

डा. नीलम श्रीवास्तवा
गोपालगंज, बिहार

नमामि गंगें.....

जय नंदनी ,नलिनी सीता ,
मालती च मलापहा ।
जय विष्णुपादाब्ज संभूता,
गंगा त्रिपथगामिनी ।
भागीरथी भोगवती जाह्ववी त्रिदशेश्वरी
हे अम्बे ! तेरी शुचिधारा ,
उत्तम है अमृत गागर से ।
तू निकल हिमालय के गृह से ,
जाकर मिलती सागर से ।
भागीरथी वरदान है तू ,
भारत का गौरव-गान है तू ।
सप्त - सरित में प्रधान है तू ,
सब मानव का मुक्ति द्वार है तू ।
ध्यान रहे ! यदि इस धरती पर ,
गंगा नही रहेगी ।
जन-जीवन नही बचेगा ,
धर्म-संस्कृति नही रहेगी ।
हे पाप नाशिनी गंगा माँ ,
दो जन को आज सुविचार ।
विचलित और शर्मिन्दा हूं ,
में तेरी दशा निहार ।
मोक्षदायनी स्वयं मोक्ष के द्वार खड़ी ,
पतित पावनी है दूषित बेजार बड़ी ।
वैतरणी-सी हालत ठहरी ,
कभी रही जो तारणी गंगा ।
बची हुई अब इतनी गंगा ,

कहाँ गयी वो अपनी गंगा ?
नमामि गंगे ,हर-हर गंगे ,
सबने महिमा गाई है ।
तेरा जल है अमृत मैया ,
पानी नही दवाई है ।
तेरे इस वैभव को माता ,
फिर से वापस लाना है ।
गंगा को स्वच्छ बनाना है ,
मोती सा फिर चमकाना है ।
जिसने सबको तारा हर -पल ,
वो ही क्यों दुखियारी है ?
आज हिमालय की बेटी पर ,
देखो संकट भारी है ।
गंगा है तो भारत है ,
ये लोगों को समझाना है ।
सदियों से बहती धारा का ,
हम सबको कर्ज चुकाना है ।
गंगा को स्वच्छ बनाना है ,
मोती सा फिर चमकाना है ।
अरे! प्रशासन भी अब जाग उठा ,
हमे मिलकर हाथ बढ़ाना है ।
कूड़ा -कचरा , गन्दा नाला ,
गंगा से दूर ले जाना है ।
कारखानों का जहरीला जल ,
शव और हाँड़ी -राखी ।
नही होगा गंगा में विसर्जित ,

मुर्दा -पशु और पाखी ।
नदी नहीं , ये माँ से बढ़कर ,
इसकी महिमा न्यारी है ।
जो भी इसकी गोद में आया ,
उसकी विपदा हारी है ।
माँ , तुझको निर्मल रखने का ,
प्रण हमने अब ठाना है ।
गंगा को स्वच्छ बनाना है ,
मोती सा फिर चमकाना है ।
गंगा क्या है ज्ञान हमारा ,
इसकी क्षती ना हो पाए ।
बच्चा-बच्चा माँ की खातिर ,
अब फौरन आगे आए ।
ये अपनी गंगा मैया है ,
हमे इसको आज बचाना है ।
हर-हर गंगे ,घर -घर गंगे ,
गीत यही दोहराना है ।
गंगा को स्वच्छ बनाना है ,
मोती सा फिर चमकाना है ।
हमें माँ का कर्ज चुकाना है ।।

सीता देवी राठी
आर ,एन रोड
च्पद बवकम--७३६१०१
कूचबिहार (पश्चिम बंगाल)
ड.६३३२०२९४१९

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें महिला उत्थान योजना अन्तगर्त मुफ्त प्रशिक्षण भी 9451647845

मेरे प्रेम की तरह

आज जबकि
तुम नहीं हो
तब भी सामने
है गंगा का किनारा
जो कभी था
उज्जवल धवल
लहराता
मेरे प्रेम की तरह
ना जाने कितनी
सुबह दुपहरिया
शाम रहा है
साक्षी ये हमारे
जीवंत क्षणों
का घंटों बैठना
बैठकर तकना
डूब जाना और
महसूसना जीवन
एक दूसरे की
आंखों में खो जाना
और महसूसना तृप्ति
आज जबकि
तुम नहीं हो
ढूंढने आई हूं
उसी किसी
एक क्षण को
पर तुम्हारी ही
तरह यहां भी

सब कुछ जा
चुका हैगंगा तो
है पर लहराती
नहीं सिमटी हुई
मलिन चादर सी
बिछी हुई तट
के किनारे कुड़ो
और मरे हुए
जीवो का बदबूदार
संसार है तैरते
जलकुंभी पर बैठी
अपने पंखों को
विश्राम देती
सुख महसूसती
कोई चिड़िया
अब नहीं दिखती
दिखती है तैरती
प्लास्टिक ,बोतल
और किसी मरे
जीव के देह
को नोचते हुए कौए,
ग्रिद्ध ,बाज जानते
हो यहां इस तरह
तट पर बरसों
बाद आकर मैंने
महसूसा हर स्त्री
की कहानी आज
गंगा सी है जब
तक किसी का प्रेम है

व लहराती कल कल
करती रहती है
खुद पर कभी इतराती
कभी इठलाती
खिलखिलाती
जीवन का
गीत बनकर
आगे बढ़ती है पर प्रेम से
रीता होने पर
साथ किसी
का छुटने पर
यूं ही कर दी
जाती है वह
मलिन हाथों से कभी तो
कभी आंखो से हर दिन
नोचते उसके तन मन
आत्मा को तार-तार करता
यह संसार तिल तिल कर
मारता है फिर भी गंगा
तो गंगा है सब कुछ
सहती है और यूं ही
निरंतर बहती है
कल भी पवित्र आज
भी जीवनदायिनी प्रेम जो
वह सागर से करती हैं
क्या कभी वह मलीन
हो मर सकती है?

डा0 विजेता साव,
कोलकता बंगाल

कभी सोचा भी न होगा

ब्रह्मा के कमंडल से निकली गंगा ने कभी सोचा भी ना होगा कि मेरी पवित्रता मेरी कोमलता शिव की जटाओं में समाहित होने के बाद भी मनुष्य के उन पापों को नहीं धो सकेगी जिनको धोने के लिए वह अपना कलुषित मन लेकर नाक और कान पकड़कर मंत्रोच्चार के साथ बार-बार डुबकिया लगाया करता है ओर फिर वहीं छोड़ देते हैं भौतिक गंदगी और साथ में वापस ले जाते हैं फिर वही अपना कलुषित मन अपने साथ।

यहाँ तक कि गंगा को पृथ्वी पर लाने के पहले भागीरथ ने भी नहीं सोचा होगा कि मैं मानव जीवन की जिस मुक्ति के लिए गंगा को पृथ्वी पर इतनी कठोर तपस्या करके ला रहा हूं वह पवित्र निर्मल मोक्ष दायिनी गंगा भी इन मलिक ह्रदय लोगों के द्वारा मलिन कर दी जाएगी? स्वर्ग से शिव की जटाओं को छूती हुई पृथ्वी पर अवतरित हुई गंगा सजर के साठ हजार पुत्रों को मुक्ति दिला पाई या नहीं यह तो हम नहीं बता सकते! परंतु इतना जरूर बता सकते हैं की गंगा जो हमारी आध्यात्मिक श्रद्धा का प्रतीक है जिसकी पनाह में अनेक सभ्यताओं संस्कृतियों का उद्भव और विकास हुआ है जो कि हमारे इतिहास और कई गौरवशाली गाथाओं की साक्षी है. जिसके किनारों पर अनेकों अनेक सभ्यता संस्कृति ज्ञान और धर्म का प्रादुर्भाव हुआ है वह आज खुद स्वस्थ नहीं है जिसका कारण सिर्फ हम हैं।

यह वही गंगा है जो हमारी आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक ही नहीं बल्कि हमें प्रेरणा देती है जो हमें हमारे जीवन की सर्वोच्चता को दूसरों की भलाई के लिए कैसे विसर्जित किया जाता है यह सिखाती है वह सिखाती है कठिन पंथ पर जीने की रहा आगे बढ़ते हुए जीवन की पथरीली राहों पर कभी भी ना डरना चाहिए ना रुकना चाहिए! गंगोत्री से निकली यह निर्मल गंगा कटीले पथरीले रास्तों से गुजरती हुई कई नदियों की धाराओं को अपने में समेटे कर कटीले रास्तों पर भी हंसती मुस्कुराती अपनी सहायक नदियों को सहारा देती और लेती आगे बढ़ती है और अपनी यात्रा को पूरा करते हुए आ जाती है।

हरिद्वार के मैदानी इलाके में विशाल पाट में समा जाने के लिए यह गढ़केसर, सोरों ,फर्रुखाबाद, कन्नौज, बिठूर, कानपुर होते हुए प्रयागराज पहुंचती है यही से ले लेती है यह अपना वक्र रूप यहां पर हम इसी उत्तरवाहिनी कहते हैं यहाँ से यह मिर्जापुर,पटना, भागलपुर और पाकुर पहुंचती है यहां भी यह अपनी सहायक नदियों को अपनी धारा में समाहित करते हुए भागलपुर में राजमहल की पहाड़ियों से दक्षिण वर्ती होती है। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के गिरिया स्थान से यह दो भागों में विभक्त हो जाती है भागीरथी नदी पद्मा नदी।

गिरिया से भागीरथी नदी दक्षिण की ओर बहती है तथा पद्मा नदी दक्षिण पूर्व की ओर बहती है और उसके बाद ही यह बंगला देश में प्रवेश करती है और आगे जाकर अपनी यात्रा करते हुए यह गंगासागर में

समा जाती है कहते हैं कि शायद सगर पुत्रों की मुक्ति के लिए ही यह वहां तक जाती है जो गंगा हमारी मुक्ति के लिए स्वर्ग से उतरकर पृथ्वी की कटीली पथरीली रेतीली भूमि से जूझती हुई हमारे पास तक पहुंचती है आज हमने उसको इतना गंदा कर दिया है कि गंगा के अस्तित्व पर ही सवाल खड़े हो गए है। अगर ऐसा ही रहा तो एक दिन ऐसा आएगा जब गंगा इस पृथ्वी से लुप्त हो जाएगी और हमारी आस्था ,हमारी निष्ठा ,हमारा विश्वास, हमारी अपनी गंदी आदतों के कारण लुप्त कर देगा एक आध्यात्मिक सच को जन-जन की जीवनदायिनी को,मोक्ष प्रदायिनी को, जीव जंतुओं की संरक्षिका को, आज भी उसके आसपास पनपने वाली कई संस्कृतियों को, खत्म कर देगा घाटों की सुंदरता को,खत्म कर देगा मुक्ति की वांछित इक्छा को,लुप्त कर देगा पहाड़ों को, जंगलों को, झर झर झरनों को,प्रकृति की उस अनमोल देन को जो बिन मांगे ही हमें जड़ी बूटियों और संजीवनी की अनमोल भेंट देती है एक मां की तरह हमारा पालन पोषण करती है।

एक दिन खो देंगे हमारी मुक्ति करने के लिए .पृथ्वी पर आई ब्रह्मा की उस बेटी को जिस की अविरल धारा हमारी आस्था की प्रतीक.मोक्ष दायिनी तो है ही। वह जलचर, थलचर ओर नभचर जीवो की जीवनदायिनी भी है। मनुष्य की प्रेरणा शक्ति है।भक्ति और मुक्ति है।एक तरह से हमारे जीवन का उद्‌गम स्रोत है।तो आओ आज हम एक शपथ लेते हैं। गंगा के तटों पर नहाने के पहले अपने शारीरिक,मानसिक आत्मिक बोझ को उतारने के पहले उससे अपने पापों के लिए माफी मांगने के पहले।

उसके आसपास अपना मल मूत्र विसर्जन ना करें।

उसके आसपास या उसके अंदर अपने फटे पुराने कपड़े डालकर ना डालें अपने गंदे हाथ उसमें ना धोए जीव जंतुओं को न नहलायें । कल कारखानों का विषैला पानी और गंदगी उसमें विसर्जित ना करें ।मोक्ष के लिए विसर्जन सिर्फ मुट्ठी भर हड्डियों का हो ढेर सारी राख का नहीं ।हम अपने साथ अस्थियां मुट्ठी भर ले जाते हैं गंदगी का ढेर नहीं।यूँ तो सरकार ने गंगा के प्रदूषण को रोकने के लिए बहुत सी कारगर योजनाएं बनाई हैं और बनाई जा रहीं हैं।पर एक सामाजिक प्राणी होने के नाते हमारे अपने भी कुछ दायित्व है

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाए
तो दूजा हाथ लगानाष

अगर आज हम इस तर्ज पर चलेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी गंगा जैसी गंगोत्री से चली है उसी रूप में हमें हर जगह दिखाई देगी।

रेखा दुबे, तिरूपति पैलेस, विदिशा, मध्यप्रदेश।

पंजाब प्रांत के हिमाचल बार्डर से सटे होशियारपुर में डा प्रिया सूफी के नेतृत्व में वर्ष में वर्ष में एक बार साहित्य सरोज पत्रिका हस्तकला, चित्रकला, पौधा प्रदर्शनी आयोजित होगा। इस कार्यक्रम में हाथ से बनाई पेटिंग, पुस्तकों हाथ से कढ़ाई बुनाई, हाथ से बनाई गई कोई भी चीज, कबाड़ से सजावाट, वागवानी के पौधो व गमालो की प्रदर्शनी लगाई जायेगी। इस प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क के साथ साथ जगह का मुल्य देना होगा। आपके सामानो की बिक्री की आनलाइन व आफलाइन बिक्री भी की जायेगी, जिसका कुछ लाभांश आपको देना होगा। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करेंगें

जय जय त्रिपथगा

जय - जय - जय हे त्रिपथगा
लीला धारी लीला करने
वामन रूपमे आये थे
तीन पगों मे, श्रृष्टि नाप कर
बलि का अहम मिटाये थे
वामन अवतारी श्रीहरि के,
तब विरंच पग धोये थे
रखे कमंडल मे संभाल जल,
श्री हरि धुन मे खोये थे
वही कमंडल का जल पावन
तब कहलायी - त्रिपथगा
गगन - धरा - पाताल गयी वो
हृदय सुहायी - त्रिपथगा
मकर वाहिनी - त्रिपथगा
मोक्षदायिनी - त्रिपथगा
कमलनयन चरणों से प्रगटी,
पाप नासनी - त्रिपथगा
निज पुर्खों के श्राप मुक्ति को,
रघुकुल राजवंश तत्पर
कई पीढियों से लाने को,
त्रिपथगा को - धरती पर
कपिल मुनि के श्राप मुक्ति को,
राजवंश व्रत लेते थे
कठिन तपस्या लीन शिखर पर,
प्राण आहुति दे देते थे
इसी वंश मे हुये भगीरथ,
बीड़ा पुनः उठाये वो

राज त्याग कर , तप करने ही,
हिमक्षेत्र मे आये वो
ऐसा उनका तप, प्रभाव से
सृष्टि पूर्णतः डोली तब
प्रकट हुये ब्रह्मा, प्रसन्न हो
बोले थे मृदु बोली तब
त्रिपथगा को धरती पर
लाने का प्रण नेक सुना
कौन वेग को रोक सकेगा
मन मे संसय कई गुना
आशुतोष ही आगे बढ़कर,
जटा बिखेरी पर्वत पर
तीन धार ही निकली सिर से,
चली वेग से त्रिपथ पर
आगे - आगे चले भगीरथ
पीछे गंगा धरती पर
जहाँ गयी सब पाप मिटाया
पहुँची तट गंगा सागर
युग - युग से हैं तार रही वो,
सम - सृष्टि, सम - भाव सदा
त्रिपथगा जय त्रिपथगा,
जय - जय - जय हे त्रिपथगा

ओम प्रकाश शुक्ल
रेलवे गार्ड
गाजियाबाद

मोक्षदायिनी– गंगा

गंगा का एक नाम भागीरथी भी है, जिसे इक्ष्वाकु वंश के राजा दिलीप के पुत्र भगीरथ कपिलमुनि के शाप से भस्म हुए अपने 60 हजार सगरपुत्रो के उद्धार हेतु कठिन तपस्या से गंगा को धरती पर लाये थे,जिसे महादेव ने अपनी निर्मल जटाओं में स्थान दिया, और सदियों से यह मोक्षदायिनी भारत भूमि और अनवरत गतिमान है।

पर वक्त बदलते स्वरूप में गंगा का पावन स्वरूप भी बदल गया, कारखानों की गंदगी, कूड़ा करकट सब इस पावन गंगा में फेंक कर इसे दूषित कर दिया, हम भूल गए ये वो जीवन दायिनी माँ है, जिसने धरती पर उतरकर न केवल शापित सगरपुत्रो का तर्पण किया वरन धरती के सूखे बंजर आँचल को सिंचित भी किया, विशाल शिखरों से उतरकर प्रति के सौंदर्य को अप्रतिम छटा प्रदान की, और प्यासी धरती को हरियाली प्रदान की, वर्ष भर जल से भरी गंगा हमारी जीवनदायिनी भी है, और हमारी धरा को शीतलता प्रदान कर हरा भरा रखाने वाली जलदायिनी भी।

इसकी महत्ता को भूल रहे लोग गंगा को मैला कर रहे नदियों में कचरा पालीथिन, फेंक कर इसकी महिमा पर एक प्रश्न बना रहे, सोचो अगर गंगा नही होगी तो हम सब जल बिना कैसे रहेंगे? प्यासे मरेंगे और भस्म बनकर पड़े रहेंगे श्मशानों में, फिर कौन भगीरथ आएगा हमे मोक्ष दिलाने?

इसलिए इस पावन गंगा को बचाओ, भगीरथ की इस मोक्षदायिनी को बचाओ, धरती की इस प्राणदायिनी को बचाओ । गंगा रहेगी तभी हम सब रहेंगे अगर हम सफाई नही कर सकते तो कम से कम गंगा तटों को गन्दा भी न करे, आदर पूर्वक दूसरो को भी गन्दा न करने की सलाह दे, गंगा हमारी माँ है, उसके आँचल को साफ रखें उसे केवल बहता हुआ पानी न समझे यही सच्चा पुण्य है और गंगा के प्रति आस्था भी।

आओ हम सब शपथ ले, गंगा की निर्मलता को उसकी पवित्रता को हम भगीरथ पुत्रो को सहेजना है, यही सच्ची प्रार्थना है, और आस्था भी।

डा.नीरज अग्रवाल
बिलासपुर;छत्तीसगढ़

वतन से प्रेम कर गये

जो अपने वतन से प्रेम कर गये
जो मरते हुए जय हिन्द कह गये
पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि
भारती माँ के सीने लिपट गये

याद है उस रोज आसमाँ रोया
प्रेम जोड़ा था बाँहों में खोया
बादल भी हाय चिंघाड़ रहा था
जब वीरों को था देश ने खोया

मैं प्रेम का इजहार कर आई
अपने वतन से प्यार कर आई
आज देशभक्ति के गीत गाकर
मेरी आँखें फिर से भर आई

जय हिन्द
सिम्पल काव्यधारा
प्रयागराज

पाबंदी के बाद

गंगा को क्यों मैली करते, इस पर हम सब करें विचार ।
नीर प्रदूषित करते जो भी, वहीं दोष के भागीदार ।।

गंगा यमुना मैली करते, जाकर खुद के धोने पाप ।
पावन नदियाँ मैली होकर,शायद देती होगी श्राप।।
दूषित जल से बोलो कैसे, जनता का होगा उ)ार ।
नीर प्रदूषित करते जो भी, वहीं दोष के भागीदार ।।

नही जरा भी जल संकट की,जिनको है कोई परवाह।
व्यर्थ बहाते नीर बहुत सा,करते सबसे बड़ा गुनाह ।।
पाप-पुण्य के सदा बहाने, करते रहते कुछ व्यापर ।
नीर प्रदूषित करते जो भी, वहीं दोष के भागीदार ।।

प्लास्टिक में पानी को बेचे, करते बहुत बड़ा अपराध।
पाबंदी के बाद आज तक, अपने मतलब लेते साध ।।
ऐसे व्यवसायी लोगों से, बन्द करें अपना व्यवहार ।
नीर प्रदूषित करते जो भी, वहीं दोष के भागीदार ।।

लक्ष्मण रामानुज लड़ीवाला
165, गंगोत्री नगर, गोपालपुरा टोंक रोड़,
जयपुर राजस्थान मो. 931424960

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें महिला उत्थान योजना अन्तगर्त मुफ्त प्रशिक्षण भी
9451647845

यूँ पलकें झुकाकर
न बैठा करिए जनाब!
बिन आंखों में देखे इस दरिया
में डूब जाएंगे ।।
सैलाब भी है,तूफान भी है,
मचलते दिल में
मेरे कई अरमान भी हैं
कभी नजर मिल गई इत्तेफाक से,
प्यार के सागर में खो जायेंगे।
यूँ पलकें झुकाकर......
अफसोस भी है,इंतजार भी है,
तड़पते दिल में कई ख़्वाब भी हैं।
कभी हकीकत गर बन गए
इत्तेफाक से,
हम सिर्फ आपके हो जाएंगे ।
यूँ पलकें झुकाकर.....
बिखरे भी हैं,निखरे भी हैं,
दिल में मेरे कई राज गहरे भी हैं।
कभी बयाँ जो हो गए इत्तेफाक से,
हम तेरे लिए फिर से जी जाएंगे।
यूँ पलकें झुका कर
ना बैठा करिए जनाब!
बिना आंखों में देखे,
इस दरिया में डूब जाएंगे।
हम मिले या ना मिले
तेरे हो जायेंगे।

'शिवानी त्रिपाठी'
'मीरापुर,प्रयागराज'

अरबो रुपये से भी न साफ हुई गंगा

भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी गंगा , देश की प्राकृतिक संपदा ही नहीं, जन जन की भावनात्मक आस्था का आधार भी है। सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण गंगा ।100 फीट या 31 मीटर की अधिकतम गहराई वाली यह नदी भारत में पवित्र मानी जाती है तथा इसकी उपासना माँ और देवी के रूप में की जाती है।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस नदी के जल में बैक्टीरियोफेज नामक विषाणु होते हैं, जो जीवाणुओं व अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देते हैं। गंगा की इस असीमित शुद्धिकरण क्षमता और सामाजिक श्रद्धा के बावजूद इसका प्रदूषण रोका नहीं जा सका है।

नवंबर, 2008 में भारत सरकार द्वारा इसे भारत की राष्ट्रीय नदी तथा इलाहाबाद और हल्दिया के बीच 1600 किलोमीटर गंगा नदी जलमार्ग- को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया।- भारत सरकार के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती गंगा में हर तरफ से आ रहा मल-मूत्र का कचरा, औद्योगिक कचरा, बूचडखानों का कचरा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने 1984 में गंगा बेसिन पर सर्वे किया जिसमे गंगा के प्रदूषण पर गंभीर चिंता व्यक्त की जिसके आधार पर पहला गंगा एक्शन प्लान को 1985 में चालू हुआ । जो 901 करोड़ रुपये लगने के साथ 15 वर्ष मे असफलताओ के बाद मार्च 2000 मे बंद कर दिया गया ।

फरवरी 2009 में राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन अथारिटी एनआरजीबीए समिति का गठन किया गया। इसमें गंगा के साथ यमुना, गोमती, दामोदर व महानंदा को भी शामिल किया गया। 2011 में इस कार्य के लिए राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन का गठन एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में किया गया। 1995 से 2014 तक की गंगा सफाई की इन योजनाओं पर 4,168 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। इसमें छोटी-बड़ी 927 योजनाओं पर काम करते हुए 2,618 मिलियन लीटर प्रतिदिन एमएलडी क्षमता हासिल की गई।

गंगा नदी विश्व भर में अपनी शुद्धि करण क्षमता के कारण जानी तो जाती ही साथ ही इसकी मान्यता का वैज्ञानिक आधार भी है। नदी के जल में प्राणवायु अक्सीजन की मात्रा को बनाए रखने की असाधारण क्षमता है। लेकिन गंगा के तट पर घने बसे औद्योगिक नगरों के नालों की गंदगी सीधे गंगा नदी में मिलने से गंगा का प्रदूषण को दिन प्रतिदिन बढाता जा रहा है जो ,सालों से भारत सरकार और जनता की चिंता को बढा रहा है। औद्योगिक कचरे के साथ-साथ प्लास्टिक कचरे के कारण भी गंगा को प्रदूषित कर रहे है। वैज्ञानिक जांच रिपोर्ट के अनुसार गंगा का बायोलाजिकल आक्सीजन का स्तर 3 डिग्री सामान्य से बढ़कर 6 डिग्री हो गया है। गंगा में 2 करोड़ 90 लाख लीटर प्रदूषित कचरा प्रतिदिन गिर रहा है। विश्व बैंक रिपोर्ट के अनुसार उत्तर-प्रदेश की 12 प्रतिशत बीमारियों की वजह प्रदूषित गंगा जल है। यह घोर चिंता का विषय है कि गंगा-जल न स्नान के योग्य रहा, न पीने के योग्य रहा और न ही सिंचाई के योग्य। गंगा के पराभव का अर्थ होगा, हमारी समूची सभ्यता का अन्त। शहर की गंदगी को साफ करने के लिए संयंत्रों को लगाया जा रहा है और उद्योगों के कचरों को इसमें गिरने से रोकने के लिए कानून बने हैं। इसी क्रम में गंगा को राष्ट्रीय धरोहर भी घोषित कर दिया गया है और गंगा एक्शन

प्लान व राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना लागू की गई हैं। हालांकि इसकी सफलता पर प्रश्नचिह्न भी लगाए जाते रहे हैं। जनता भी इस विषय में जागृत हुई है। इसके साथ ही धार्मिक भावनाएँ आहत न हों इसके भी प्रयत्न किए जा रहे हैं। इतना सबकुछ होने के बावजूद गंगा के अस्तित्व पर संकट के बादल छाए हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र की 2007 की रिपोर्ट के अनुसार हिमालय पर स्थित गंगा की जलापूर्ति करने वाले हिमशिखर की 2030 तक समाप्त हो जाने की आशंका है। इसके बाद गंगा नदी का जल मानसून पर निर्भर हो जाएगा।

गंगा को प्रदूषण से मुक्त करने के लिये अनेको सरकारी प्रयास और योजनाये चल रही है जिसमे नमामि गंगे योजना गंगा को निर्मल और अविरल बनाने के काम पर लगभग 40 से 50 हजार करोड़ रुपये तक का खर्च आने का अनुमान है। जबकि सरकार ने फिलहाल इस काम के लिए 20 हजार करोड़ रूपए आवांटित किए गए हैं। गंगा को स्वच्छ करने में पांच साल का समय लगने की उम्मीद है, जबकि उसके घाटों के सौंदर्यीकरण व परिवहन की समूची योजना के क्रियान्वयन में लगभग डेढ़ दशक लग सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि गंगा की स्थिति दुनिया की अन्य नदियों से भिन्न है। इसमें हर रोज लाखों लोग डुबकी लगाते हैं। करोड़ों लोगों की आस्था के महाकुंभ जैसे आयोजन होते हैं। सैकड़ों टन पूजन सामग्री भी इसमें प्रवाहित होती है।जिसे रोकना सबसे बडी चुनौती है।

प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद नरेन्द्र मोदी ने गंगा नदी में प्रदूषण पर नियंत्रण करने और इसकी सफाई का अभियान चलाया। इसके बाद उन्होंने जुलाई 2014 में आम बजट में नमामि गंगा नामक एक परियोजना आरम्भ की। इसी परियोजना के हिस्से के रूप में भारत सरकार ने गंगा के किनारे स्थित 48 औद्योगिक इकाइयों को बन्द करने का आदेश दिया है। अनेको तकनिकियो के जरिये गंगा सफाई अभियान चलाया जा रहा है। जून 2015 से इसे आठ शहरों कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, मथुरा-वृंदावन, पटना, साहिबगंज हरिद्वार व नवद्वीप में गंगा सफाई योजना को पायलट परियोजना के रूप में शुरू किया गया। यह काम घाटों पर किया जा रहा है। इसमें ट्रेश स्कीमर, एरेटर्स, बूम आदि अति आधुनीक करोड़ो की लागत के उपकरणों का उपयोग किया जाएगा। जिसकी आपूर्ति के लिये श्र)ालुओं को उनके परिजनों के नाम से दान देने के लिए प्रेरित किया जाएगा और लगने वाले शिलापट्टो पर उनके नाम भी लिखे जाएंगे। सफाई मे योगदान देने के लिये स्वयंसेवक ,सामाजिक समूहों को 10 से 20 दिन के लिए आमंत्रित करके रहने खाने की व्यवस्था के साथ कुछ राशि भी देने का प्रावदान किया जा रहा है । साथ ही आधुनिक शवदाह गृह, माडल धोबी घाट और अन्य घाटों पर सोलर पैनल आदि बनाए जाएंगे।

इस सबके बावजूद समूची गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त करना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसकी सफलता के लिए जरूरी है कि सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं, वाणिज्यिक उपक्रम और धार्मिक संस्थान भी पूरी ईमानदारी के साथ इस राष्ट्रीय कार्यक्रम से जुड़े। गंगा के आस-पास रहने वाले प्रत्येक भारतीय का भी यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि वह स्वछ गंगा निर्मल गंगा के राष्ट्रीय कार्यक्रम में जिस रूप में भी संभव हो हर सम्भव प्रयास करे ।

ज्योती किरन रतन
लखनऊ

प्यास बुझाती

गंगा मैया युगों युगों से जन मन में गंगा नदी का स्थान माँ का है। प्यास बुझाती ,खेतों को सींचती, अन्न-धन दायिनी, जीवन दायिनी ही नहीं सतयुग से भगीरथ की तपस्या से अवतरित सगर के साठ हजार पुत्रों को मृत्युपरांत मोक्ष प्रदायिनी गंगा नदी आज भी लोगों के ह्रदय में श्र(ा और पूजनीय स्थान पर स्थित है। अपने जीवन में एक बार गंगा स्नान के लिए लोग लालायित रहते हैं। मृत्यु के समय दो बूँद गंगाजल की कामना सभी के मन में रहती है।आज भी लोग अपने मृत परिजनों की अस्थियाँ गंगा में ही प्रवाहित करते हैं। माना जाता है इससे वैकुण्ठ धाम की और मोक्ष की प्राप्ति होती है। लोग जन्म मरण के चक्र से मुक्त होते हैं।

व्रत ,उत्सवों पर गंगा तट पर भक्तों की भीड़ लग जाती है। वहाँ स्नान दान और पुण्य ही नहीं वरन जीवन में किए गए पापों का भी परिक्षालन हो जाता है.भारतीय जन मानस में ,लोक गीतों में,कथाओं में ,पूजा पाठ में गंगा और उसके पवित्र जल का समावेश होता है।

गंगा की महानता का सबसे बड़ा कारण उसके जल की अनोखी विशेषता है जो कभी खराब नहीं होता। देश में ही नहीं विदेशी विज्ञान शोध शालाओं में भी उसके जल की परीक्षा से यह बात सर्व मान्य है। अन्य नदी का जल कुछ समय बाद खराब हो जाता है वह पेय नहीं रहता। वहीं गंगा जल को कई वर्षों के बाद भी पूर्व व्रत शुद्ध पाया गया है। वह न तो मैला होता है न कोई गंध ही पैदा होती है.इसीलिए लोग तीर्थों से गणजल लाकर घरों में रखते हैं जो हर धार्मिक कार्य में प्रयुक्त किया जाता है। प्राचीन श्रृषि मुनियों ने गंगा की स्तुति गायन किया है.कई स्तोत्र रचे हैं । महर्षि वाल्मीकि ,शंकराचार्य और तुलसीदास ने उनकी स्तुति की है।

शंकराचार्य जी ने कहा है देवगण की ईश्वरी ,तीनों लोकों को तारने वाली शिव के मस्तक पर विराजने वाली ,सब प्राणियों की रक्षा करने वाली ,हरि चरणों से आई ,हिम चन्द्रमा और मोती की तरह श्वेत तरंगों वाली।पापों का भर दूर कर भाव सागर से पार उतार दो।

जिसने तुम्हारा जल पि लिया परम पद पा लेता है जो भक्ति करता है वह याम के द्वार न जाकर।वैकुण्ठ में निवास करता है। जह्नु श्रृषि की कन्या हिमालय से बहती ,भीष्म पितामह की माँ हो। भक्तों को पाप मुक्त करने वाली हो। उन्होंने गंगा तट पर निम्न योनि में रहना भी श्रेष्ठ माना।

तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका में कहा है कि
हरनि पाप त्रिविधताप सुमिरत सुर सरित।
बिलसति महि कल्प -बेलि मुद -मनोरथ फरित। .
सोहत ससि धवल धार सुधा सलिल भरित
विमल तर तरंग लसत रघुबर के -से चरित।
तो बिनु जगदम्ब गंग कलिजुग का चरित ?
घोर भव-अपार सिंधु तुलसी किमि तरित।

ऐसी पतित पावनि ,भाव बाधा हारिणि गंगा माँ लोगों के कलुष धोती आज खुद इतनी कलुषित और विषैली हो गयी है की उसका जल आचमन योग्य नहीं रहा गया है। आज हमारे स्वार्थ ने अपना सारा कूड़ा करकट ,मैले पदार्थ उसमें बहाने के कारण उसको इतना मलिन बना दिया है की उसका दम घुटने लगा। अब कुछ लोगों में जागरूकता आई तो गंगा नदी की सफाई और स्वच्छता अभियान चलाये जा रहे हैं। कुछ लोग अनशन कर सरकार से गुहार लगा रहे हैं। सरकारी योजनाओं में करोड़ों रूपये लगने पर भी यह कार्य संपन्न नहीं हो पाया। ये योजनाएं कागजों पर ही रह जाती हैं। अब जरुरत इस बात की है कि प्रत्येक नागरिक इसे अपना कर्तव्य समझे। गंगा और सभी नदियों को स्वच्छ रखें। कूड़ा करकट ,फैक्ट्रियों का कूड़ा न फेंकें। जिस नदी ने निरंतर माँ की तरह अपनी संतानों की भलाई की है, कल्याण किया है उनके प्रति हमारा भी यह कर्तव्य है। प्राचीन लोग इन्हें देवी- देवता- माँ के रूप में पूजते आये तो हम सभ्य और विकसित कहलाए जाने वाले लोग इस ओर सिर्फ व्याख्यान देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री न समझें।

ज्योतिर्मयी पंत
गुरुग्राम

क्या निर्भया को इंसाफ मिला.....?

क्या सही मायने में निर्भया को न्याय मिल पाया? मृत्यु दण्ड दे कर क्या निर्भया की आत्मा को शांति मिल पाएगी? क्या निर्भया के दोषियों को फाँसी पर लटकाने के पश्चात बलात्कारियों की उत्पत्ति रुक जाएगी? एक साथ कई सवाल जेहन में फाँसी से पहले भी थेऔर अब फाँसी होने के बाद भी रह -रह कर झिंझोड़ रहे हैं।आखिर कौन देगा इन सबके जवाब! हाँ इतना अवश्य है कि निर्भया की माँ ने राहत की साँस ली होगी।दो हजार बारह से लेकर अब तक न्याय का दरवाजा खटखटाते हुए उनके पैरों में पड़े छालों को अवश्य राहत मिली होगी लेकिन न ही उनके दर्द का अंत होगा और न ही निर्भया की आत्मा को शांति मिलेगी।

सोचने वाली बात है जो जघन्य कृत्य निर्भया के साथ किया गया जिसे सोचने मात्र से ही रूह काँप जाती है उस अपराध के लिए फाँसी पर लटका देना !चन्द मिनटों में आखिर कितनी तड़प मिली होगी! न जाने क्यों निर्भया की माँ उनके लिए मौत माँगती रह गई। इस तरह के दरिंदों के लिए इतनी आसान सजा? इनके लिए तो जिन्दा रहना ही सबसे बड़ी सजा होती जब उनका एक हाथ और एक पैर तोड़ दिया जाता और हर रोज उनसे कठिन से कठिन कार्य करवाया जाता।जो उन्हें उनके द्वारा किए गए अपराधों का एहसास हर पल कराता। उनको जिन्दा देख भविष्य में पैदा होने वाले दरिंदों को भी जघन्य कृत्य करने से पहले कुछ तो डर होता। मौत तो कुछ ही दिनों में दिलोदिमाग से निकल जाएगी लेकिन जिन्दा त्रासदी तो पल पल याद दिलाती रहती ।पश्चाताप का भी अवसर प्राप्त होता।हो सकता है हैवान से इन्सान बनने का भी सफर शुरू होता।

प्रश्न उठता है कि क्या इस तरह के अपराधों के लिए ये दरिन्दे अकेले जिम्मेदार थे? नहीं.. बिल्कुल भी नहीं कहीं न कहीं हम सब भी जिम्मेदार ह सबसे पहले इनको जन्म देने वाले माता-पिता , जिन्होंने न जाने कौन सी मानसिकता के रहते हुए इनका बीजारोपण किया। जन्म के बाद जब इनकी छोटी छोटी गलतियों पर इन्हें अगाह नहीं किया गया । बच्चों की गलतियों को छुपाने की कोशिश अक्सर माता पिता के द्वारा किया जाना।

हमारा फिल्मी जगत तो सबसे अधिक गुनहगार है इस तरह के जघन्य अपराधों का । जिस तरह के अश्लील दृश्यों को अक्सर फिल्मों में परोसा जाता है उन्हें देखकर तो कोई भी बहक जाय तो इस तरह की मानसिकता वालों का क्या कहना ।न जाने सेंसर बोर्ड को इतनी सी बात क्यों नहीं समझ आती। वही हाल प्रिंट मीडिया का है जो इतनी कामुकतापूर्ण तस्वीरों से सजा रहता है जिन्हें देखकर हर कोई नयनसुख लेता रहता है तो फिर मानसिक रोगियों के विकार तो बढ़ेंगे ही। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने तो सारी ही हदें पार कर दी हैं ।कोई भी वेबसाइट खोलिये अचानक से ऐसे दृश्य सामने आ जाएँगे जिनको देखकर संयमी भी फिसल जाएँगे तब फिर ऐसे मानसिक रोगियों की तो बात ही छोड़ दीजिए।

ऐसे जघन्य अपराधों को जन्म देने में हम सभी जिम्मेदार हैं किसी खास वर्ग को ही दोष देने से हम अपनी जिम्मेदारियों से भाग नहीं सकते।इस तरह के अपराध तब तक समाप्त नहीं हो सकते जब तक हर नागरिक अपनी भूमिका ईमानदारी के साथ निभाने के लिए संकल्पित न हो जाय। क्या हम सब मिलकर इस तरह के अश्लील साहित्य, अश्लील दृश्य , अश्लील फिल्मों, अश्लील इलेक्ट्रानिक मीडिया का बहिष्कार करने को तैयार हैं? यदि हाँ तभी हम एक स्वस्थ समाज की कल्पना करने के हकदार हो सकते हैं जिसमें हर निर्भया निर्भय होकर विचरण कर सकती है। हर युवा एक आदर्श व्यक्तित्व का धनी हो सकता है ।जहाँ फिर किसी की मौत पर मिठाई बाँटने और खुशी मनाने की आवश्यकता न हो।

माधुरी भट्ट पटना

बिखरता-सँवरता बचपन

मक्के के खेत में तेज़ कदमों से जाती हुई रमावती कुछ बड़बड़ाते हुए जा रही थी तभी अचानक उसके कदम रुक गए। उसने अपनी नौ साल की बेटी को शीशे के टुकड़े में स्वयं को बार-बार झाँकते हुए देखा। वह कुछ समझ नहीं पाई और उसके निकट जाकर देखा तो हैरान रह गई। ये क्या उसकी माँग सिंदूर से भरी हुई थी मानो माँ के कलेजे पर किसी ने जलते हुए लाल अंगारे रख दिए। पर्वतीया को जैसे ही अहसास हुआ कि कोई उसके पीछे है उसने फौरन पलटकर देखा और अपने सामने अपनी माँ को देखकर वह भय से काँपने लगी, सिसक-सिसक माँ के सीने से लगकर रोने लगी ।

माँ को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या प्रतिक्रिया करे। फिर उसे किसी तरह चुप करवाकर वहीं पास में कुएँ की मेड़ पर बैठ गई और उससे कहा, ''इ का कर रही थी पर्वतीया और काहे रोई इतना तनिक समझाकर बताओ बिटिया हमका बड़ी घबराहट होत है।''

पर्वतीया जो लगभग शांत हो चुकी थी फिर आँखों में आँसू भरकर बोली, ''का बताएँ माँ तुमका तुम तो शहर कमाने जात हो पर इहाँ चाचा-चाची हमरे ब्याह की तैयारी करत हैं। एही ला हम चोरी-चुप्पे सेंदूर लगाए के आपन चेहरा देख रहत थे।'' उसने अपनी माँ को जो बताया उसका सारांष यही था कि उसके चाचा-चाची के लिए वह बोझ बन चुकी थी जिसकी शादी करवाकर वे दोनों उससे मुक्ति पा लेना चाहते थे। रमावती अपनी एकमात्र संतान की शिक्षा-दीक्षा के लिए बड़े शहर जाकर काम कर रही थी ताकि वह उसे उसके पैरों पर खड़ा कर सके और यही सपना उसके पिताजी ने भी उसके लिए देखा था जिनका देहांत चार साल पहले ही हो चुका था। माँ अपनी बेटी को अपने साथ नहीं रख सकती थी क्योंकि वह सुबह से शाम तक मज़दूरी करती थी। उसके चाचा-चाची को वह पैसे भी देती थी ताकि उसकी बेटी को कोई तकलीफ़ न हो। इतना ही नहीं पर्वतीया से उसकी चाची जितना हो सकता था काम करवाती थी और फिर भी चार बातें सुनाकर ही उसे कुछ खाने को देती थी।

उस मासूम बच्ची के कोमल हृदय पर उसके चचेरे भाई-बहनों व चाचा-चाची ने यह चित्र उकेर दिया था कि विवाह के उपरांत उसे अच्छा भोजन, वस्त्र व आभूषण प्राप्त होगा। जब एक दिन उसने भोलेपन से 'ब्याह' का मतलब पूछा तो उसकी चाची ने यह बताया कि माँग में सिंदूर भरने से ब्याह हो जाता है और फिर जीवन की सारी तकलीफ़ें दूर हो जाती है। बेचारी बच्ची माँग में सिंदूर भरने को ही अपने दुखों का रामबाण इलाज समझ रही थी। यही कारण है कि वह चुपके-चुपके अपनी माँग में खूब सारा सिंदूर भर रही थी।

अपनी बच्ची के मुख से ये सब सुनकर रमावती आज खुद को बहुत हारा हुआ महसूस कर रही थी। अब उसके पास एक ही रास्ता था और बिना किसी से कुछ कहे अपनी बेटी का हाथ थामे वह शहर की ओर चल पड़ी। कड़ी धूप में अपनी माँ को तपते देखकर पर्वतीया स्वयं को म नही मन बहुत कोसती रहती। पर उसके दुख ने उसको कहीं न कहीं अंदर से बहुत मज़बूत कर दिया था। माँ के लाख मना करने पर भी पर्वतीया अपनी माँ के साथ मज़दूरी करने लगी थी। पर पढ़-लिखकर कुछ बनने का जज़्बा भी उसके रगों में लहू की तरह दौड़ रहा था। उसे जहाँ कहीं कोई पुस्तक का पृष्ठ, अखबार का टुकड़ा जो भी मिलता शाम को उसे पढ़ने बैठ जाती। उसकी इस लगन को देखकर शहर में एकांत जीवन व्यतीत करने वाली मालती के हृदय को द्रवित कर दिया था। फुटपाथ पर रहने वाली इन माँ-बेटियों को वह अक्सर अपने महल जैसे घर की खिड़की से देखती थी। एक दिन उसके कदम स्वतः उठे और वह रमावती और पर्वतीया के पास पहुँच गई।

सीमा रानी मिश्रा,
हिसार, हरियाणा

साहित्य में जीवन की विवेचना

अनुभूतियों, विचार और चिंतन की मानव जीवन के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो आदर्श बनकर उपस्थित परिस्थितियों में संघर्षरत होते हुए भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है , यही जीवन का यथार्थ है । मानव का चिंतन ही साहित्य की सर्जना करता है । साहित्य में जीवन के समस्त पहेलुओं की विवेचना होती है जिसमें एकांगी दृष्टिकोण का स्थान नहीं क्योंकि साहित्य में जीवन की व्यापकता की संस्थापना समाहित है । यह सम्बंध सूत्र परिस्थितियों पर निर्भर करता है और स्वाभाविक रूप से साहित्य पर परिस्थितियों और परिवेश का प्रभाव पड़ता ही है इसीलिए साहित्य में शाश्वत सिद्धांतों के समन्वय के साथ युगानुकूल सामयिकता विद्यमान रहती है ।

पत्र-पत्रिकाओं ने सदैव से ही समाज के बदलाव और नवीन राहों के दिग्दर्शन, विकास और उद्‌भावना की तलाश का महती कार्य किया है जो सामान्य प्रक्रिया मात्र नहीं वरन् एक कठिन साधना रही है और हमारी साहित्यिक पत्रिकाओं की परम्परा अत्यंत समृद्धशाली रही है ।

आज बढ़ती तकनीक ,पत्रिकाएं खरीद कर न पढ़ने की प्रवृत्ति और शब्दों के क्षरण होने के कारण पत्रिकाओं का दायित्व और अधिक बढ़ गया है । वर्तमान में लाभ अर्जित करने की प्रतिस्पर्धा जिसमें आभ्यांतरिक साधना के लिए अवकाश नहीं रहा । जहाँ साहित्य की समन्वयात्मक शक्ति और विचारों की सांस्कृतिक सृष्टि को परे रख तात्कालिक हितों को प्रश्रय देने का भय व्याप्त हो तो पत्रिकाओं का जन मानस से आत्मीय रिश्ता कैसे बने, गहन विमर्श और आत्म विश्लेषण का विषय है ।

जब किसी पत्रिका के साथ साहित्यिक शब्द जुड़ जाता है तो बात संस्कृति और संस्कार की आ जाती है । कारण कि साहित्य परिष्कार है । सोच- विचार, चिंतन-मनन,रहन सहन, आदतों आदि में मानवीय परिष्कार का नाम ही संस्कार है । यदि हमें जीवन मूल्यों की रक्षा करना और अपसंस्कृति के संकट से समाज को बचाना है तो ऐसे संक्रमणशील समय में साहित्य के अनुशीलन,विचार,आत्ममंथन और दूर सृष्टि का सम्यक संतुलन ही समस्याओं के निराकरण में प्रभावी भूमिका का निर्वाह कर सकता है क्योंकि मनुष्य की वृत्तियों और अनुभव के सत्य के आधार पर किया गया रचना कर्म सर्वकालिक और सांस्कृतिक चिंतन को आश्वस्ति प्रदान करने वाला होता है । आधुनिक परिवेश की भौतिकवादी संस्कृति ने वैचारिक आत्मरिक्तता को जन्म दिया है । विज्ञापनों का मायाजाल हमारी सांस्कृतिक अस्मिता और नैतिक मूल्यों का ह्रास कर बाह्य सौन्दर्य के लिए प्रेरित कर रहा है । जबकि सभ्यता और संस्कृति की प्रगति भौतिकता से नहीं आभ्यांतरिक विकास से होती है ।

अतः सांस्कृतिक अवमूल्यन की रक्षा के लिए साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन, संरक्षण और संबर्द्धन को प्रोत्साहित करना हमारा कर्तव्य बन जाता है।

कान्ति शुक्ला
प्रधान संपादक साहित्य सरोज
अयोध्या नगर बाईपास
भोपाल

अविरल गंगे

जय जय अविरल गंगे।
हिम गिरि निर्गत फेनिल गंगें।
पावन धवल तरंगिनि गंगें।
हर हर गंगें कल कल गंगें

गोमुख से गंगा सागर तक
फटिक शिला सम उज्जल गँगें।
औषधि युक्ता रोग विमुक्ता
सुजल सुफला शीतल गंगें।

शंकर कलित जटा निसृत-नद
ब्रहमनंदिनी सुरसरि गंगें
देव वंदिनी वेद गायिनी
मुग्धा मधुर सुधा जल गंगें

मन रंजित मधुमय नौकायन
यथा जीव जग प्लावन संगें
जीवन कल्लोलित अंतस्तल
तट वन खग मृग नंदित गंगें।

मुक्ति हेतु कलि जीवन गंगें।
हुतात्मादि- जलांजलि गंगें।
पुष्पांजलि आरती तरंगें,
सर्वे भवन्ति सुखिना गंगें

अन्नपूर्णा बाजपेयी
कानपुर

श्रीमती सरोज सिंह महिला आनलाइन प्रशिक्षण

पूरे भारत से आवेदन के आधार पर महिलाओं को अभिनय/माडलिंग, स्टील/वीडियो फोटोग्राफी व एडिटिंग, डिजिटल विज्ञापन व स्क्रीन प्रिंटिंग के अलग अलग प्रशिक्षण दिये जायेगें। बनाना सीखा जायेगा। चयनित महिलाओं अभिनय/माडलिंग, स्टील/वीडियो फोटोग्राफी व एडिटिंग, डिजिटल विज्ञापन के पाठ्यक्रम आनलाइन दिये जायेगें। वीडियो कान्फ्रेसिंग व वाटस्एप समूह के माध्यम से प्रतिदिन उनका क्लास भी चलेगा। प्रत्येक दिवस क्लास का समय अगल अलग होगा। वाटस्एप समूह में समस्त चयनित महिलाएं एक साथ रहेगीं। माह के अंत में उनकी आनलाइन परीक्षा होगी। सफल होने पर प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र देते हुए उनको कुछ शार्ट मूवी व डिजिटल विज्ञापन फिल्म में अनुभव के लिए उनके शहर में ही कार्य कराया जायेगा तथा उनको एक ई-फोटो प्रोर्टफोलियो मुफ्त बना कर दिया जायेगा। उनके शहर में उनके प्रशिक्षण के अनुसार व्यवसाय करने हेतु मदद की जायेगी। जिसका खर्च उनके द्वारा, बैंक के द्वारा, संस्था द्वारा संयुक्त रूप से उठाया जायेगा। कोर्स 6 माह का होगा तथा प्रशिक्षको की संख्या तीन होगी। यह योजना 2 अप्रैल से लागू होगी। यह योजना केवल उन महिलाओं के लिए होगी जो विशेष रूप से फोटोग्राफी में रूची रखती हैं। जो कभी सपने में इस पेशे को करना देखी थी। विशुद्ध रूप से व्यवसायिक इस योजना में वर्तमान परिवेश के अनुसार, वर्तमान माँग के अनुसार ही प्रशिक्षण दिया जायेगा। इस में यह सिखाया जायेगा कि आप कैसे खुद एवं अपने क्षेत्र के लोगो को विज्ञापन व्यवसाय, रंगमंच व्यवसाय, नुक्कड़ नाटक, इत्यादि में सफल बने और बनावें। यह एक विशेष योजना है जिसकी जानकारी के लिए आप blackbeauty.live व https://sarojsahitya.page देखें या 9451647845 पर काल करें।

प्रिटिंग व्यवसाय के तहत उनको स्क्रीन प्रिटिंग की पूरी जानकारी दी जायेगी जिससे वह घर बैठे शादी का कार्ड, विजिटिंग कार्ड, इत्यादि की घर बैठे छपाई कर सकें। छपाई में प्रयोग होने वाले सामना उन्हें प्रदान किये जायेगें।

महिलाओं में आत्मबल/सकारात्मक सोच/उनके उत्थान व प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के गुण सिखाने के लिए समय-समय देश के विभिन्न क्षेत्रो में हम स्थानीय संस्थाओ/स्कूलों, महाविद्यालयों अथवा प्रशासन के सहयोग से सेमीनार का आयोजन करेगें जिसमें कुछ आशिंक शुल्क लागू होगा। आप भी अपने शहर/गाँव में हमारे साथ मिल इस कार्यक्रमको करा सकते हैं विशेष जानकारी हेतु blackbeauty.live व https://sarojsahitya.page देखें या 9451647845 पर काल करें।

आप के आसपास व आपके क्षेत्र आपके राज्य की अनछुई सभ्यता-संस्कृति,पहनावा, खान-पान, उद्योग, प्रसिद्ध चीजे, कलाकृतियाँ, विशेष लोग, तीज-त्यौहार, अन्य विशेष जानकारी आप द्वारा आपके अपनो के सहयोग के द्वारा प्राप्त उनके नाम से प्रकाशित करते हुए उनके सहयोग व स्थानीय गैर व्यवसायिक कलाकारो से अभिनय/एंकरिंग करा कर डाकुमेंन्ट्री बना कर उसे प्रसारित करना। आप अपने क्षेत्र/राज्य की जानकारी हमें देने व इस संबंध में अपनी कोई विशेष जानकारी हेतु blackbeauty.live व https://sarojsahitya.page देखें या 9451647845 पर काल करें।

आप द्वारा या अन्य माध्यम से प्रतिभा के धनी परन्तु बीमार किसी समस्या से ग्रस्त साहित्यकारों कलाकारों व शिक्षाविदो की जानकारी मिलने पर उनकी जीवनी, कार्य, योग्यता पत्रिकाओं, चैनलो के माध्यम से प्रकाशित करते हुए उनकी वर्तमान हाल की उनके शहर के सक्षम अधिकारी को सूचना देते हुए स्थानीय व देश स्तर पर उनकी मदद की अपील करते हुए उनकी समस्या का समाधान उनका ईलाज/ यदि वो अभी तक गुमनाम है तो उनके योग्यता से रचना/कृतियों,उनकी कला से, उनके कार्यो से संसार का परिचय। इसमें हमें आपका भी सर्वोतम सहयोग चाहिए, आप भी ऐसे लोगो को खोजें हम तो खोज ही रहे हैं।9451647845

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका साहित्य सरोज

(RNI NO. UPHIN/2017/74520)की संस्थापिका की

स्वर्गीय श्रीमती सरोज सिंह

की पुण्यतिथि 02 अप्रैल को

महिला उत्थान दिवस

के रूप में मनाये जाने का

हार्दिक स्वागत करती हूँ/ करता हूँ।

साहित्य सरोज पत्रिका परिवार से जुड़ने हेतु

माँ को नमन और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
मैं श्री/श्रीमती...
निवासी...
व्यवसाय............मोबाइल...............मेल..............
त्रैमासिक पत्रिका साहित्य सरोज पत्रिका परिवार के साथ अपने जिले/अपने स्थान से प्रभारी के रूप में जुड़ना चाहता हूँ/चाहती हूँ। मैं अवगत हूँ कि मुझे अपने क्षेत्र से पत्रिका के लिए प्रकाशन सामाग्री, नये लेखको व बेरोजगार बेसहारा महिलाओं को आगे लाने, गुमनाम व बीमार साहित्यकारों का पता लगा कर उसकी जीवनी इत्यादि लिखने, एवं वर्ष में तीन बार होने वाले साहित्यिक व रंगमंच के कार्यक्रमों का प्रसार प्रसार एवं सम्मान हेतु योग्य व्यक्यिों का चुनाव करना होगा। यह कार्य गैर वैतनिक होगा। मैं इसके लिए कभी वेतन की माँग नहीं करूँगा/करूँगी।

आप से निवेदन है कि मुझे इस कार्य हेतु .... जिले/स्थान से नामित करते हुए इसकी सूचना मुझे व मेरे जिले के सूचना विभाग को भेजने का कष्ट करें। मैं वादा करता हूँ/करती हूँ कि पत्रिका द्वारा चलाये जा रहे महिला उत्थान के कार्यो में बढ़ चढ़ कर अपना सहयोग दूँगा/दूँगी।

दिनांक **हस्ताक्षर**